केवल आंतरिक परिचालन के लिए

सेन्ट्रलाइट
CENTRALITE

खंड / Vol. 47 • अंक - 04 मार्च / March 2025

विशेष आकर्षण
प्राचीन से नवीन बैंकिंग

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 17 जनवरी 2025 को हमारे केन्द्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी सफल निरीक्षण किया गया.

दिनांक 24 जनवरी 2025 को भारतीय बैंक संघ (आईबीए) के 20वें बैंकिंग प्रौद्योगिकी सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी बैंक विजेता का पुरस्कार प्राप्त करते हुए माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव, माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे तथा अन्य वरिष्ठ कार्यपालक गण.

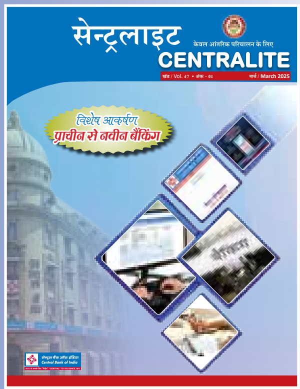

.. न हि ज्ञानेन सदृशं ..

संपादक
पॉपी शर्मा

संपादक मंडल
वास्ती वेंकटेश
राजीव वार्ष्णेय

संपादकीय सहायक
हितेन्द्र धूमाल
अमित कुमार झा
सुनील कुमार साव

Editor
Poppy Sharma

Editorial Board
Vasti Venktesh
Rajiv Varshney

Editorial Assistant
Hitendra Dhumal
Amit Kumar Jha
Sunil Kumar Shaw

ई-मेल / E-mail
centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

Articles Published in this magazine does not necessarily contain views of the Bank.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका
A Quarterly House - Journal of Central Bank of India
प्रकाशन तिथि - 08.05.2025 • खंड / Vol. 47 - 2025 • अंक - 1 • मार्च / March 2025

विषय-सूची / CONTENTS

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 4
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 5
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश 6
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश 7
संपादकीय 8
मानव संसाधन पहल: मार्च 2025 9
बैंकिंग व्यवस्था: प्राचीन से नवीन बैंकिंग 10
कविता - मुस्कुराओ 13
कविता - विद्यालय 13
भारतीय बैंकिंग और विपणन की अवधारणा 14
अंडमान और निकोबार की यात्रा परिवार के साथ - एक रोमांचक एवं अविस्मरणीय अनुभव 16
आइए आपको मुंबई की सैर कराएँ 19
अर्धांगिनी 25
तनाव और ग्राउंडिंग तकनीक द्वारा तनाव प्रबंधन 27
Work, Life, and the Art of Balance 28
अंचल पूर्णियाँ 'परानपुर' गाँव की कथा:'परती-परिकथा' 29
कविता - किताबें 32
कविता - माँ 33
कविता - स्टेशन की रोटी 33
अधूरे सपने 37
पदोन्नति 37
राजभाषा की आवश्यकता एवं राजभाषा से अपेक्षा 38
हिंदी: लोकल से ग्लोबल 40
नारी शक्ति-समाज और राष्ट्र निर्माण में योगदान 41
पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी): एक स्थायी भविष्य की दिशा में बैंकिंग का नया रास्ता 44
Book Review - Banking Beyond Border 47
प्राचीन से नवीन बैंकिंग: एक परिवर्तनशील यात्रा 49
कविता - बेटियाँ 51
सेवानिवृत्ति 52

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : सुश्री पॉपी शर्मा, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

Designed, Edited and Published by Ms. Poppy Sharma for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001
Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं मार्च 2025 में ₹ 7 लाख करोड़ का व्यवसाय पार करने एवं उत्कृष्ट कार्य परिणामों के लिए देशभर में कार्यरत सभी सेन्ट्रलाइट्स को हार्दिक बधाई देता हूं. इसके साथ-साथ मैं आगामी पर्वों के लिए भी आप सबको अपनी मंगलकामनाएं देता हूं.

महान दूरदृष्टा सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा दिनांक 21 दिसंबर 1911 को स्थापित देश का पहला पूर्ण स्वदेशी बैंक एक विशाल बट वृक्ष की तरह आज भारत के कोने-कोने में कार्यरत है. हमारे प्रिय बैंक ने अपनी 113 वर्षों से अधिक की यात्रा में उत्कृष्टता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं. देशवासियों को नवोन्मेष बैंकिंग, नए बैंकिंग उत्पाद और अपनेपन के साथ ग्राहक सेवा की अनुभूति करायी है. समय के उतार-चढ़ाव के साथ बैंक ने अनेक समस्याओं का सामना किया और पुन: और अधिक बेहतर बनकर उभरा. आज के डिजिटल युग में बैंक पूरी तरह डिजिटल सेवाएं प्रदान करते हुए फिर से प्रगति के शिखर को छूने के लिए तेजी से आगे बढ़ रहा है. ये सब समस्त सेन्ट्रलाइटों के सम्मिलित प्रयासों से ही संभव हुआ है.

हमारे प्रिय बैंक की प्रगति की इस यात्रा को और बेहतर बनाने के लिए प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को इसे अच्छे बैंक से महान बैंक बनाने की दिशा में कार्य करना है. इस प्रक्रिया के लिए हमने वर्तमान वित्त वर्ष 2025-26 की थीम व्यवसाय वृद्धि का वर्ष (योबा 156) रखी है. इसके अंतर्गत निम्न कार्यों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है.

1. प्रत्येक शाखा करंट डिपॉजिट में न्यूनतम ₹ 1.00 करोड़ की वृद्धि करे.
2. प्रत्येक शाखा बचत खाते में न्यूनतम ₹ 5.00 करोड़ की वृद्धि करे.
3. प्रत्येक शाखा सावधि जमा में न्यूनतम ₹ 6.00 करोड़ की वृद्धि करे.

इसके लिए सभी सेन्ट्रलाइट:

- उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करें.
- प्रत्येक लक्ष्य को बड़े मार्जिन से प्राप्त करें.
- बैंक की प्रगति की गति अन्य व्यवसायिक बैंकों से अधिक रखें.
- व्यवसाय बढ़ाने के लिए शाखा एवं क्षेत्र अपने एरिया में व्यवसाय के नए अवसर खोजें और उन्हें क्रियान्वित करें.
- उधारकर्ताओं से नियमित संपर्क करें और अपने एनपीए को न्यूनतम स्तर पर लाएं.
- शाखा परिसर स्वच्छ रखें.
- शाखा में प्रवेश करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति की बैंकिंग समस्याओं का शीघ्र समाधान करें.

यह ध्यान रखें कि हमारा बैंक अपनी स्थापना के समय, जब प्राचीन पद्धति से बैंकिंग की जाती थी तब भी तीव्र गति से आगे बढ़ा और क्रमश: बढ़ती तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाते हुए भी बैंक ने प्रगति जारी रखी. आज के डिजिटल युग में बैंक के सामने प्रगति की असीम संभावनाएं है. प्रत्येक सेन्ट्रलाइट का यह संकल्प होना चाहिए कि हमारे बैंक की प्रगति के लिए ''Sky is the Limit'' (असीमित ऊँचाई तक) को मानते हुए अपने प्रिय सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को अच्छे से महान बैंक बनाना है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम.वी. राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के साथ मैं सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव के कुशल नेतृत्व में बैंक द्वारा मार्च 2025 में दर्शाए गए शानदार कार्यकारी परिणामों के लिए प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को हार्दिक बधाई देता हूं.

आधुनिक दौर में बैंकिंग समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो चली है. बैंकिंग सामान्य जन के जीवन की अनिवार्यता बन गयी है. प्राचीन दौर में बैंकिंग केवल उच्च आय वर्ग के लिए होती थी, जबकि निम्न आय वर्ग के लिए बैंक में प्रवेश भी सपने जैसा था. धीरे-धीरे समय बदला, दौर बदला, बड़ी बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ और बैंक, बड़े शहरों से निकलकर छोटे शहरों, कस्बों से होते हुए गाँव-गाँव तक पहुंचे और बैंकों के दरवाजे, समाज के हर वर्ग के लिए खुल गए. दस वर्ष पूर्व, प्रधानमंत्री जन-धन योजना के माध्यम से हर परिवार का बैंक खाता भी खुल गया अर्थात, आज की भारतीय बैंकिंग, समाज के हर वर्ग के लिए उपलब्ध हो गयी है.

इसके अतिरिक्त नवीन तकनीक ने भी बैंकिंग में आमूल चूल परिवर्तन कर दिए हैं. पहले की बैंकिंग जहां हस्तलिखित होती थी. बैंकिंग का कामकाज कागज की बनी खाता बहियों पर चलता था, वहीं अब समस्त बैंकिंग कार्य डिजिटल हो चुका है. साथ ही अब बैंकिंग मोबाइल और कम्प्यूटरों के माध्यम से 24*7 बिना अवकाश के कभी भी, कहीं से भी करनेवाला कार्य बन चुका है. व्यक्ति कभी भी, कहीं से भी खाता खोल सकता है, ऋण ले सकता है, केवायसी प्रक्रिया पूर्ण कर सकता है, धनराशि प्रेषित एवं प्राप्त कर सकता है.

इस दौर में प्रत्येक सेन्ट्रलाइट का यह कर्तव्य है कि वह बेहतर से बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करे. अपने ग्राहकों को डिजिटल बैंकिंग अपनाने के लिए प्रोत्साहित करे. नए ग्राहक और नया व्यवसाय प्राप्त करने का प्रयास करें तथा अपनी शाखा में एक बेहतर टीम के रूप में मिलजुलकर अपनी शाखा, अपने क्षेत्र, अपने अंचल का व्यवसाय बढ़ाने तथा 'योबा 156' के लक्ष्य प्राप्त करने में अधिकतम संभव योगदान दें.

इस वर्ष सभी वर्गों एवं स्तरों पर पदोन्नति प्रक्रिया निर्धारित समय में पूर्ण हुई हैं एवं लैटरल तथा अनुरोध के ट्रांसफर भी समय से सम्पन्न किए गए हैं. सभी पदोन्नत एवं स्थानांतरित सदस्य नये कार्य क्षेत्र में पहले से कार्यरत साथियों के साथ मिलकर एक सशक्त टीम के रूप में हमारे प्रिय सेन्ट्रल बैंक को अच्छे से महान बैंक बनाने का हर संभव प्रयास करें.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं माननीय एमडी एवं सीईओ सर के दूरदर्शी मार्गदर्शन में बैंक द्वारा वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान दर्शाए गए उत्कृष्ट कार्य परिणामों के लिए सभी सेन्ट्रलाइटों को हार्दिक बधाई देना चाहता हूं.

जैसा कि आप जानते हैं कि व्यवसाय वृद्धि का वर्ष अर्थात 'योबा 156' (YOBA 156) वर्तमान वित्तीय वर्ष का मुख्य विषय और आकर्षण है. इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक है कि प्रत्येक सेन्ट्रलाइट जमा राशि संग्रहण में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करे. सामूहिक प्रयास से ही हम अपने उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा कर सकते हैं.

हमारे बैंक द्वारा 'योबा 156' (YOBA 156) को लॉन्च करने का प्रमुख उद्देश्य यह है कि हमारी प्रत्येक शाखा ₹12 करोड़ की जमा राशि जुटाने का लक्ष्य प्राप्त कर सके, जिससे हम इस राशि को प्रभावी ढंग से नियोजित कर सकें.

हमारे ऋण जमा (सीडी) अनुपात के 70% से अधिक हो जाने से यह स्पष्ट है कि हमारी ऋण वृद्धि दर अब हमारी जमा वृद्धि दर को पीछे नहीं कर सकती. संतुलित और टिकाऊ विकास सुनिश्चित करने के लिए हमारे दृष्टिकोण में रणनीतिक बदलाव की आवश्यकता है.

हमारे पास 8.65 करोड़ से अधिक ग्राहकों की समग्र ताकत एवं उनका आधार है, जिनमें से 64% युवा एवं पेशेवर दक्ष कार्मिक हैं. हमारे पास इस बैंक से एक और बैंक बनाने की क्षमता है.

इसके अतिरिक्त, हमारे 2.64 लाख ग्राहकों के पास ₹1 करोड़ से अधिक की जमा राशि है, जो धन प्रबंधन और क्रॉस-सेलिंग के लिए महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है.

हमें विभिन्न स्रोतों से मजबूत लीड्स प्राप्त हो रही है और यह आवश्यक है कि हम इन अवसरों को वास्तविक परिणामों में अवश्य बदलें.

हमारी भली भांति से स्थापित प्रक्रियाएं, नवोन्मेष एवं नए युग के उत्पादों के शुभारंभ के साथ मिलकर, इन अवसरों को प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकती है.

ये सही समय है जब हम आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़कर, अपने लक्ष्यों को बड़े मार्जिन से प्राप्त करें तथा कार्यक्षेत्र में बेहतर कार्य निष्पादन के नए मानक स्थापित करें.

सर्वोत्तम ग्राहक सेवा हमारे निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की कुंजी है. अपने सभी ग्राहकों को प्रसन्न रखें. एक प्रसन्न ग्राहक सभी दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करवाने का एक बेहतर माध्यम भी है.

हार्दिक शुभकामनाएँ.

(एम वी मुरली कृष्णा)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

अत्यंत हर्ष का विषय है कि सम्माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम वी राव के कुशल नेतृत्व में हमारे बैंक ने वित्तीय वर्ष 2024-25 की चारों तिमाहियों में लाभ अर्जित किया है. यह सभी सेन्ट्रलाइटों के दृढ़ परिश्रम, लगन एवं निष्ठापूर्वक किए गए प्रयासों का प्रतिफल है. मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य के परिणाम भी हमारे इन प्रयासों को और मजबूती प्रदान करेंगे और हमें एक सशक्त बैंक बनाने की ओर ले जाएंगे.

हमारा बैंक अब ''अच्छे बैंक से महान बैंक'' बनने की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ रहा है. यह परिवर्तन केवल व्यवसायिक आंकड़ों का नहीं, बल्कि सोच, दृष्टिकोण और तकनीकी नवाचार का भी है. हमने परंपरागत बैंकिंग से आगे बढ़कर आधुनिक डिजिटल बैंकिंग की दिशा में अनेक पहलों को सफलतापूर्वक लागू किया है.

हाल ही में हमारे बैंक द्वारा लॉन्च किया गया ''सेंट ईज़'' मोबाइल ऐप इसी दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है. यह ऐप ग्राहकों की सभी प्रमुख बैंकिंग आवश्यकताओं की वन क्लिक में पूर्ति करने में सक्षम है. सरल उपयोग, तीव्र सेवा, और सुदृढ़ सुरक्षा के संगम से यह ऐप बैंकिंग अनुभव को एक नई ऊँचाई तक ले जाने वाला है. डिजिटल युग में ग्राहक की अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए इस तरह की पहलें हमारे बैंक को प्रतिस्पर्धात्मक रूप से आगे रखने में सहायक सिद्ध होंगी.

वर्तमान वित्त वर्ष 2025-26 का हमारा ध्येय व्यवसाय वृद्धि का वर्ष (योबा YOBA 1-5-6) रखा गया है. इसके अंतर्गत हमारी प्रत्येक शाखा करंट डिपॉजिट में न्यूनतम ₹ 1.00 करोड़, बचत खाते में न्यूनतम ₹ 5.00 करोड़ एवं सावधि जमा में न्यूनतम ₹ 6.00 करोड़ की वृद्धि करे.

हमें दिनांक 31.03.2026 तक ₹ 8.25 लाख करोड़ के व्यवसाय का लक्ष्य प्राप्त करना है. इस कार्य में सभी सेन्ट्रलाइटों द्वारा अधिक से अधिक योगदान दिया जाना चाहिए.

मैं आपसे आह्वान करता हूँ कि सब मिलकर इस परिवर्तन को और गति दें, ग्राहकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरें, और हमारे बैंक को ''महान बैंक'' के रूप में स्थापित करें.

हार्दिक शुभकामनाएँ.

(महेंद्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

मैं अपनी बात का प्रारंभ माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव तथा तीनों माननीय कार्यपालकगणों के कुशल नेतृत्व में बैंक द्वारा प्रदर्शित शानदार कामकाजी परिणामों के लिए प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को हार्दिक बधाई देते हुए करना चाहती हूं.

हमारा बैंक अब प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है. बैंक न केवल व्यवसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल हुआ है अपितु विगत वित्त वर्ष में स्टाफ सदस्यों के लिए भी बहुत सारी नयी सुविधाएं प्रारंभ कर चुका है. ऑनलाइन योग प्रशिक्षण, ऑनलाइन चिकित्सा परामर्श, ऑनलाइन समस्या परामर्श आदि प्रारंभ किए गए हैं. विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी सभी पदोन्नति प्रक्रियाएं समय से पूरी हुई तथा सभी स्थानांतरण तथा लैटरल ट्रांसफर भी समय से पूरे किए गये हैं. बैंक ने एचआरएमएस का नया और बेहतर ऐप जारी किया है. सभी स्टाफ सदस्यों के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण प्रारंभ किया गया है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने प्राचीन बैंकिंग से निकलकर अब अपने कामकाज को पूरी तरह डिजिटल कर दिया है. इसमें सेंट ईज जैसे नवीनतम यूजर फ्रेंडली ऐप जारी कर ग्राहकों को बेहतर डिजिटल सुविधा प्रदान करने का कार्य किया है.

जैसा कि आप जानते हैं, वर्तमान वित्त वर्ष की थीम व्यवसाय वृद्धि वर्ष (योबा 156) है, अर्थात हमारी प्रत्येक शाखा को ₹ 1 करोड़ करेंट अकाउंट, ₹ 5 करोड़ सेविंग अकाउंट एवं ₹ 6 करोड़ एफडी जमा को बढ़ाना है. यानी कुल मिलाकर प्रत्येक शाखा को न्यूनतम ₹ 12 करोड़ की जमा वृद्धि करनी है. ये आप कर सकते हैं. आप में पूरी क्षमता है.

प्रत्येक सेन्ट्रलाइट बेहतर ग्राहक सेवा दे और 'योबा 156' को सफल बनाने में हर संभव योगदान प्रदान करे.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

यदि तुम में सहनशक्ति है तो तुम में किसी बात की कमी नहीं - नारायण दास

मानव संसाधन पहल: मार्च 2025

1. कर्मचारी कल्याण योजना - 2024-25 के अंतर्गत वार्षिक स्वास्थ्य जांच सुविधा के लिए सेवा प्रदाता की नियुक्ति (कर्मचारी परिपत्र संख्या 1687, दिनांक 20.03.2025)

   सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने कर्मचारियों को कैशलेस आधार पर वार्षिक स्वास्थ्य जांच सुविधा प्रदान करने के लिए मेडीव्हील (मैसर्स आर्कोफिमी हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड) और मेडीबडी (मैसर्स फेजर्ज़ टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड) नामक दो सेवा प्रदाताओं को शामिल किया है.

   इसके अंतर्गत हमारे इन सेवाप्रदाताओं द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

   - आयु समूह और लिंग के अनुसार वर्गीकृत एक व्यापक स्वास्थ्य पैकेज
   - सुविधानुसार केंद्र भ्रमण एवं गृह नमूना संग्रहण पैकेज का चयन.
   - किसी भी स्थान से वेब पोर्टल और ऐप्स के माध्यम से परेशानी मुक्त बुकिंग.
   - वरिष्ठ प्रबंधन वेतनमान IV और उससे ऊपर के बैंक कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य जांच केंद्रों पर विभिन्न सेवाएं.

   उपरोक्त के अतिरिक्त, कर्मचारी के आश्रितों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों और उनके जीवनसाथी के लिए स्वास्थ्य जांच का लाभ आयु के अनुसार निर्धारित दरों पर भुगतान के आधार पर उठाया जा सकता है. साथ ही, योजना के तहत सेवा प्रदाताओं के माध्यम से अन्य सभी नियमित परीक्षण रियायती दरों पर बुक किए जा सकते हैं.

   वैकल्पिक रूप से, कर्मचारी अपनी पसंद की कंपनी से भी स्वास्थ्य जांच करवा सकते हैं, बाहरी अस्पताल/क्लिनिक/लैब को भुगतान की गई शुल्क की प्रतिपूर्ति निम्नानुसार की जाएगी:-

   - 40 वर्ष तक के आयु वर्ग के लिए -1499/-
   - 40 वर्ष से अधिक एवं 50 वर्ष तक के आयु वर्ग के लिए - 1750/-
   - 50 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लिए -2820/-

2. कर्मचारी परिपत्र संख्या 01, दिनांक 01 अप्रैल 2024 के माध्यम से सेन्ट-चेतना (कर्मचारी सहायता कार्यक्रम) और सेन्ट-आरोग्य (24X7 असीमित टेली-मेडिकल परामर्श सेवा) का आरंभ वित्त वर्ष 2024-25 के लिए किया गया था. इसका उद्देश्य हमारे बैंक के सभी कर्मचारियों एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए 1टू1 हेल्प. नेट प्राइवेट लिमिटेड और क्यूकवेल टेक्नोलॉजीज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ''प्रैक्टो'' के सहयोग से कर्मचारी सहायता कार्यक्रम (ईएपी) और 24x7 टेली-मेडिकल परामर्श सेवा उपलब्ध कराना है. कर्मचारियों एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों द्वारा प्राप्त सकारात्मक अनुक्रिया के चलते बैंक ने इन सेवाओं को पुन: एक वर्ष के लिए विस्तारित करने का निर्णय लिया है.

   कर्मचारी सहायता कार्यक्रम कर्मचारियों को उनके व्यक्तिगत एवं व्यवसायिक जीवन में आने वाली विभिन्न चुनौतियों जैसे तनाव प्रबंधन, प्रसवोत्तर कार्य परिवर्तन, कार्य-जीवन संतुलन, वित्तीय चिंताओं आदि से निपटने में मदद करने के लिए गोपनीय परामर्श एवं सहायता सेवाएं प्रदान करता है.

   इसके अतिरिक्त, क्यूकवेल टेक्नोलॉजीज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ''प्रैक्टो'' के साथ हमारी साझेदारी बैंक के कर्मचारियों एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों को बैंक की लागत पर 24x7 असीमित टेली-मेडिकल परामर्श सेवाएं प्रदान करेगी. साथ ही 20% की छूट के साथ कर्मचारी अपने एवं परिवार सदस्यों के लिए डायग्नोस्टिक परीक्षण बुक कर सकते हैं तथा दवाइयां मंगा सकते हैं. इसमें विभिन्न स्वास्थ्य लेख भी उपलब्ध हैं.

   यह सेवा हमारे सभी कर्मचारियों एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों को उपलब्ध कराई जाएंगी, जिसमें उनके निकटतम परिवार के सदस्य (पति/पत्नी, माता-पिता व दो बच्चे) भी सम्मिलित हैं.

बैंकिंग व्यवस्था: प्राचीन से नवीन बैंकिंग

बैंकिंग व्यवस्था मानव सभ्यता के आर्थिक विकास की एक महत्वपूर्ण आधारशिला रही है. समय के साथ इसकी संरचना, उद्देश्य और कार्य प्रणाली में अनेक परिवर्तन आए हैं. प्राचीन काल की सीमित लेन-देन प्रणाली से लेकर आज की डिजिटल और वैश्विक बैंकिंग प्रणाली तक की यात्रा अत्यंत रोचक और प्रेरणादायक रही है.

प्राचीन बैंकिंग व्यवस्था: सिन्धु घाटी सभ्यता (3300-1300 ईसा पूर्व)- भारत में बैंकिंग की शुरुआत सिंधु घाटी सभ्यता से मानी जाती है. यहाँ के लोग मुद्रा की बजाय वस्तु विनिमय (बार्टर सिस्टम) का उपयोग करते थे. बाद में, धातु के सिक्कों और मोहरों का प्रचलन हुआ.

मेसोपोटामिया और बेबीलोन (2000 ईसा पूर्व)- मेसोपोटामिया में सबसे पुराने बैंकिंग लेन-देन के प्रमाण मिले हैं, जहाँ मंदिरों और महलों में अनाज और कीमती धातुओं को जमा किया जाता था. बेबीलोन में ''हम्मुराबी का कोड'' (1792-1750 ईसा पूर्व) में ऋण और ब्याज से संबंधित नियम बनाए गए थे.

प्राचीन भारत में बैंकिंग का प्रारंभ व्यापारियों और साहूकारों से हुआ, जो ब्याज पर धन उधार देते थे. वे केवल मुद्रा के लेन-देन तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि व्यापारिक अनुबंध, वस्तु विनिमय और बचत जैसे कार्यों में भी संलग्न थे. मौर्यकाल (322-185 ई.पू.) में 'अध्यक्ष' नामक अधिकारी बैंकिंग से संबंधित कार्यों का संचालन करते थे. कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में बैंकिंग जैसी गतिविधियों का उल्लेख मिलता है. मौर्य काल (322-185 ईसा पूर्व) में श्रेष्ठी (व्यापारिक बैंकर) और साहूकार ऋण देने का काम करते थे. गुप्त काल (320-550 ईस्वी) में सोने के सिक्के (दीनार) चलन में थे और व्यापारियों द्वारा हुंडी (विनिमय पत्र) का प्रयोग किया जाता था.

मध्यकालीन बैंकिंग व्यवस्था: मध्यकाल में व्यापार और वाणिज्य के विस्तार के साथ बैंकिंग ने अधिक संगठित रूप लेना शुरू किया. 12वीं से 16वीं शताब्दी के दौरान, इटली के शहर-राज्य (जैसे वेनिस, फ्लोरेंस, जेनोआ) व्यापार और वित्त के महत्वपूर्ण केंद्र बन गए. यहीं पर आधुनिक बैंकिंग की नींव रखी गई. व्यापारी परिवार, जैसे मेडिसी, ने बड़ी मात्रा में धन का प्रबंधन किया, ऋण दिए और विनिमय पत्र (bills of exchange) का उपयोग शुरू किया, जिससे दूर देशों में धन का हस्तांतरण आसान हो गया. यहूदी लोगों ने मध्यकाल में यूरोप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उन्होंने व्यापार और अन्य गतिविधियों के लिए आवश्यक ऋण प्रदान किए. व्यापारियों के गिल्ड और संघों ने भी अपने सदस्यों को वित्तीय सहायता प्रदान की और व्यापार को बढ़ावा दिया.

12वीं शताब्दी में इटली के वेनिस और फ्लोरेंस में पहले आधुनिक बैंक स्थापित हुए. मेडिसी बैंक (1397) और बैंक ऑफ बार्सिलोना (1401) ने यूरोपीय बैंकिंग को नई दिशा दी.

भारत में मुगल काल (1526-1857) में साहूकार और महाजन ऋण देते थे. शाहजहाँ के समय हुंडी प्रणाली व्यापक रूप से प्रचलित थी, जिससे दूर के व्यापारियों को पैसा भेजना आसान हो गया. मध्यकाल में व्यापार का विस्तार हुआ, जिससे धन के सुरक्षित लेन-देन की आवश्यकता बढ़ी. इस समय साहूकारों और व्यापारिक गिल्ड्स ने बैंकिंग जैसे कार्य किए.

आधुनिक बैंकिंग का विकास: बैंक ऑफ इंग्लैंड (1694) - पहला केन्द्रीय बैंक एवं बैंक ऑफ अमेरिका (1784) - अमेरिकी बैंकिंग का आधार बना.

भारत में आधुनिक बैंकिंग की शुरुआत: बैंक ऑफ हिंदुस्तान (1770) - भारत का पहला बैंक, जिसकी स्थापना अंग्रेजों ने की. प्रेसीडेंसी बैंक (1806) - बैंक ऑफ बंगाल, बैंक ऑफ बॉम्बे और बैंक

अपव्यय से बचना चाहिए.

ऑफ मद्रास की स्थापना हुई. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया (1911)- जिसे भारतीय द्वारा स्थापित किया गया था. इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया (1921) - जिसे बाद में भारतीय स्टेट बैंक (SBI) में बदला गया.

स्वतंत्रता के बाद भारतीय बैंकिंग: राष्ट्रीयकरण (1969 और 1980) - सरकार ने 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया. निजीकरण और उदारीकरण (1991) - आर्थिक सुधारों के बाद निजी बैंकों को अनुमति मिली (आईसीआईसीआई, एचडीएफसी, एक्सिस बैंक आदि).

आधुनिक बैंकिंग और डिजिटलीकरण: 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद निजी और विदेशी बैंकों का आगमन हुआ. तकनीकी विकास के कारण बैंकिंग प्रणाली ने डिजिटल रूप धारण कर लिया: ATM, नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, UPI, IMPS, आदि सेवाओं ने ग्राहकों के लिए बैंकिंग को 24x7 उपलब्ध कराया.

आधार आधारित बैंकिंग और डिजिटल वॉलेट्स ने बैंकिंग को और सुलभ बना दिया. 20वीं और 21वीं शताब्दी में तकनीकी प्रगति ने बैंकिंग उद्योग को पूरी तरह से बदल दिया है.

स्वचालित टेलर मशीन (ATM): एटीएम ने ग्राहकों को शाखाओं पर जाए बिना नकदी निकालने और अन्य बुनियादी बैंकिंग कार्यों को करने की सुविधा प्रदान की.

क्रेडिट और डेबिट कार्ड: इन प्लास्टिक कार्डों ने भुगतान के तरीके को सरल और सुविधाजनक बना दिया.

ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग: इंटरनेट और मोबाइल प्रौद्योगिकी के विकास ने ग्राहकों को कहीं से भी अपने खातों तक पहुंचने और लेनदेन करने की अनुमति दी है.

डिजिटल भुगतान प्रणाली: विभिन्न प्रकार की डिजिटल भुगतान प्रणालियों (जैसे UPI, इलेक्ट्रॉनिक वॉलेट) ने नकदी के उपयोग को कम किया है और त्वरित और सुरक्षित लेनदेन को बढ़ावा दिया है.

फिनटेक (FinTech): वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनियों ने नवाचार के माध्यम से बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में क्रांति ला दी है. वे भुगतान, ऋण, निवेश और अन्य क्षेत्रों में नए और अधिक कुशल समाधान पेश कर रहे हैं.

क्रिप्टोकरेंसी और ब्लॉकचेन: क्रिप्टोकरेंसी और ब्लॉकचेन जैसी नई तकनीकों ने पारंपरिक बैंकिंग प्रणाली को चुनौती दी है और वित्तीय लेनदेन के भविष्य को आकार देने की क्षमता रखती हैं.

नवीनतम प्रवृत्तियाँ: फिनटेक कंपनियाँ अब पारंपरिक बैंकों को चुनौती दे रही हैं. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ब्लॉकचेन, और बिग डेटा जैसी तकनीकों से बैंकिंग और अधिक सुरक्षित और अनुकूल बन रही है.

डिजिटल बैंकिंग युग 21वीं सदी में बैंकिंग पूरी तरह डिजिटल हो गई है: ई-बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) नेट बैंकिंग, डिजिटल वॉलेट (Paytm, PhonePe, Google Pay) ब्लॉकचेन और क्रिप्टोकरेंसी - भविष्य की बैंकिंग प्रणाली

बैंकिंग व्यवस्था ने प्राचीन काल के साधारण विनिमय प्रणाली से लेकर आज के डिजिटल युग तक एक लंबा सफर तय किया है. तकनीकी विकास और ग्राहकों की बदलती जरूरतों के साथ बैंकिंग सेक्टर निरंतर विकसित हो रहा है. भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकें बैंकिंग को और भी सुरक्षित एवं सुविधाजनक बनाएंगी. इस प्रकार, बैंकिंग व्यवस्था न केवल आर्थिक गतिविधियों का आधार है, बल्कि मानव सभ्यता के विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ भी है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया : प्रगति के पथ पर

1911 में स्थापित, सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया भारत का पहला वाणिज्यिक बैंक था, जो पूर्ण रूप से भारतीयों के स्वामित्व और प्रबंधन के अधीन था. अपनी स्थापना के समय से ही, बैंक ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और समय-समय पर कई चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है. वर्तमान में, यह 'अच्छे बैंक' की अपनी मजबूत नींव पर 'महान बैंक' बनने की दिशा में लगातार प्रगति कर रहा है. सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया (Central Bank of India) भारत के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक है. 1911 में स्थापित, यह बैंक ''भारत की पहली स्वदेशी वाणिज्यिक बैंकिंग संस्था'' होने का गौरव रखता है, जिसकी स्थापना भारतीयों के पूंजी निवेश और प्रबंधन से हुई थी. 21 दिसंबर 1911, सर सोराबजी पोचखानावाला द्वारा सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की स्थापना की गयी थी. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की मजबूत नींव इसके गौरवशाली इतिहास, राष्ट्रव्यापी उपस्थिति और ग्राहकों के अटूट विश्वास पर आधारित है. हजारों शाखाओं के विशाल नेटवर्क के साथ, बैंक देश के कोने-कोने तक अपनी सेवाएं पहुंचाता है. इसने हमेशा ईमानदारी, पारदर्शिता और नैतिक आचरण को महत्व दिया है, जिससे ग्राहकों और हितधारकों के बीच एक मजबूत विश्वास का रिश्ता कायम हुआ है.

भारत का पहला बैंक जिसने महिला कर्मचारियों को नियुक्त किया (1921), इंडियन बैंकिंग में ATM शुरू करने वाले अग्रणी बैंकों में से एक, 1949 में भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम के तहत राष्ट्रीयकृत हुआ.

हाल के वर्षों में, सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया ने कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है जो इसे 'महान बैंक' की ओर ले जा रही है:

बैंक ने 'सेन्ट नियो' (Cent NEO) जैसे डिजिटल परिवर्तन पहलों के माध्यम से बैंकिंग अनुभव को क्रांतिकारी बना दिया है. जेन-एआई जैसी अत्याधुनिक तकनीकों को ग्राहक सेवा और परिचालन दक्षता बढ़ाने के लिए एकीकृत किया गया है. डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म (DLP) जैसे उत्पादों ने क्रेडिट तक पहुंच को आसान बनाया है. सेन्ट ईज़ Cent eeZ एप इस दिशा में एक बेहतर कदम है, जो ग्राहकों को बैंकिंग एवं अन्य सुविधाएँ एक ही प्लेटफोर्म पर उपलब्ध करवा रही है.

बैंक टिकाऊ बैंकिंग प्रथाओं को बढ़ावा दे रहा है, जैसे सह-ऋण मॉडल और एमएसएमई वित्तपोषण, जो समावेशी विकास को बढ़ावा देते हैं.

बैंक को डिजिटल भुगतान लेनदेन में उच्चतम प्रतिशत प्राप्त करने के लिए ''उत्कर्ष पुरस्कार/डिजिटल उत्सव'' और राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए ''राजभाषा शील्ड'' जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है. सेंट नियो डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म को स्कॉच गोल्ड अवार्ड भी मिला है.

डिजिटल बैंकिंग और तकनीकी उन्नयन-सेन्ट मोबाइल ऐप और इंटरनेट बैंकिंग: उपयोगकर्ता-अनुकूल इंटरफेस के साथ सुरक्षित लेनदेन.

- यूपीआई और डिजिटल भुगतान: CBI-UPI, भीम, PhonePe, Google Pay जैसे प्लेटफॉर्म्स से एकीकरण.
- AI और डेटा एनालिटिक्स: ग्राहक व्यवहार विश्लेषण और जोखिम प्रबंधन में सुधार.

वित्तीय समावेशन और सामाजिक प्रतिबद्धता

- प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY): लाखों नए खाते खोलकर वित्तीय समावेशन को बढ़ावा.
- किसान ऋण और MSME सहायता: कृषि एवं लघु उद्योगों के लिए सस्ते ऋण.
- ग्रामीण बैंकिंग: शाखाओं और बैंकिंग सहयोगियों (BCs) के माध्यम से दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुँच.

ग्राहक सेवा में उत्कृष्टता

- 24x7 कस्टमर केयर: टोल-फ्री नंबर और चैटबॉट सहायता.
- शाखा आधुनिकीकरण: डिजिटल कियोस्क और सेल्फ-सर्विस बैंकिंग.
- फास्ट-ट्रैक लोन प्रोसेसिंग: ऑनलाइन आवेदन और त्वरित स्वीकृति प्रणाली.

वित्तीय सुदृढ़ता और प्रदर्शन

- NPA (गैर-निष्पादित आस्तियों) में कमी: सख्त ऋण निगरानी और रिकवरी प्रयास.
- लाभप्रदता में सुधार: राजस्व वृद्धि और लागत नियंत्रण के उपाय.
- शेयर बाजार में मजबूत उपस्थिति: निवेशकों का बढ़ता विश्वास.

भविष्य की रणनीति: महान बैंक बनने की दिशा में

1. डिजिटल इनोवेशन: ब्लॉकचेन, बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन और AI-आधारित बैंकिंग.
2. युवाओं और स्टार्टअप्स को लक्षित उत्पाद: फिनटेक साझेदारी और डिजिटल लोन.
3. सतत विकास (ESG पहल): हरित ऊर्जा परियोजनाओं को वित्तपोषण.
4. ग्राहक अनुभव में और सुधार: पर्सनलाइज्ड बैंकिंग और प्रीमियम सेवाएँ.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने अपने 114 वर्षों के इतिहास में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, लेकिन अब यह एक मजबूत, तकनीक-संचालित और ग्राहक-प्रथम बैंक के रूप में उभर रहा है. ''अच्छे से महान'' की इस यात्रा में बैंक की प्रगति न केवल इसके वित्तीय संकेतकों, बल्कि समाज में इसके योगदान और डिजिटल परिवर्तन की गति से भी परिलक्षित होती है.

कुमार विवेक
क्षेत्रीय प्रमुख
मुजफ्फरपुर

मुस्कुराओ

आज के लिए मुस्कुराओ
सिर्फ एक बार दिन में,
आज के लिए मुस्कुराओ.
जिस साँस को तुम लेते हो, उसके लिए मुस्कुराओ.
जिस हवा में हम जीते हैं, उसके लिए धन्यवाद कहो.
जो रोज़मर्रा के काम हम करते हैं, उनके लिए धन्यवाद कहो.
खुशी को अंदर भरो,
तनाव को बाहर छोड़ो.
सिर्फ एक बार दिन में,
जो कुछ तुम्हारे पास है, उसके लिए आभार मानो.
जो तुम हो, उसके लिए खुद को स्वीकारो.
तुम एक चमत्कार हो,
तुम्हारे अंग अनमोल हैं.
तो जो नहीं है, उसे भूल जाओ,
और कृतज्ञता में साँस भरो.
हर कदम पर ख़ुशी और अच्छा स्वभाव फैलाओ.
आज के लिए मुस्कुराओ
सिर्फ एक बार दिन में,
आज के लिए मुस्कुराओ.

विद्यालय

''ओ मेरे मन, मैं कितना तरसती हूँ अपने विद्यालय के सुनहरे वर्षों के लिए!''

मैं नन्हे कदमों से चल पड़ी थी अपने विद्यालय की ओर,
आंखों में जगमगाते सपने, मन में उमंग भरपूर.
बगीचे की पगडंडी पर रंग-बिरंगे फूल खिले,
उन्हें निहारते हुए मेरा मन भी खुशी से झूमें.
''ओ मेरे मन, मैं कितना तरसती हूँ, अपने विद्यालय के सुनहरे वर्षों के लिए!''
अनुशासित कक्षाओं में बीते वो प्यारे पल,
पी.टी. और खेलों का था अलग ही जलवा हर पल.
वाद-विवाद और भाषणों में सबने जोश दिखाया,
विद्यालय की चारदीवारी में हर हुनर निखरकर आया.
''ओ मेरे मन, मैं कितना तरसती हूँ, अपने विद्यालय के सुनहरे वर्षों के लिए!''
वो बेकरी की खुशबू जब लहराकर आती,
घंटी बजने से पहले ही हमें ललचाती.
अली की समोसे और पेस्ट्री की दुकान पर दौड़ लगाते,
मिलकर दोस्तों संग स्वाद का आनंद उठाते.
''ओ मेरे मन, मैं कितना तरसती हूँ, अपने विद्यालय के सुनहरे वर्षों के लिए!''
रिले दौड़ और बाधा दौड़ की थी अपनी शान,
टीम के लिए जोश में भरकर बजाते थे तान.
स्वतंत्रता दिवस और खेल दिवस की परेड,
जैसे केक पर चेरी, देती थी हमें गर्व की स्नेहरेख.
''ओ मेरे मन, मैं कितना तरसती हूँ, अपने विद्यालय के सुनहरे वर्षों के लिए!''
आज अपने व्यक्तित्व पर गर्व है मुझे,
क्योंकि अब मैं जानती हूँ- ''मैं वही हूँ जो मैं हूँ''.
सिर्फ अपने पद से नहीं, बल्कि इंसानियत से भी,
यह सब संभव हुआ, मेरे प्रिय शिक्षकों की दी हुई सीख से ही.
''ओ मेरे मन, मैं कितना तरसती हूँ, अपने विद्यालय के सुनहरे वर्षों के लिए!''

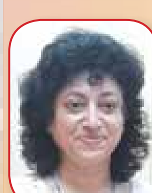

वीना जोसेफ
क्रेडिट गारंटी सेल, भोपाल

भारतीय बैंकिंग और विपणन की अवधारणा

परिचय

''भारतीय बैंकिंग और विपणन की अवधारणा'' एक समृद्ध, विस्तृत और बहुआयामी संरचना है, जो देश की आर्थिक संरचना और सामाजिक उत्थान में अपनी अद्वितीय भूमिका निभाती है. यह विचार न केवल ग्राहकों की वित्तीय आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को समझने का प्रयास करता है, बल्कि उन्हें विश्वसनीय और प्रभावशाली सेवाओं का आश्वासन भी प्रदान करता है.

भारतीय बैंकिंग एक कालातीत परंपरा और आधुनिक प्रगति का संगम है, जहाँ वित्तीय स्थिरता और नवाचार के तत्व आपस में गुंथे हुए हैं. विपणन, दूसरी ओर, ग्राहक संतोष और सृजनात्मकता की एक अनोखी कला है, जो बैंकिंग संस्थानों को केवल एक सेवा प्रदाता ही नहीं, बल्कि ग्राहकों के विश्वासपात्र साथी के रूप में स्थापित करती है.

यह अवधारणा एक प्रतिष्ठित प्रतीक है, जो ग्राहकों और बैंकों के बीच विश्वास और सहयोग के एक सेतु का कार्य करती है, और भारतीय अर्थव्यवस्था को गौरवशाली उन्नति के पथ पर अग्रसर करती है.

वर्तमान और भविष्य के ग्राहकों की अपेक्षाएं और आवश्यकताएं

आज बैंकिंग उद्योग तेज़ी से बदलाव के दौर से गुजर रहा है. भारत में जागरूक ग्राहकों की ज़रूरतें पूरी करने के लिए बैंकिंग क्षेत्र में एक नई क्रांति का माहौल है. ग्राहकों की अपेक्षाएँ और माँगें बढ़ गई हैं, और बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने बैंकों को, अन्य उद्योगों की तरह, ग्राहकों को आकर्षित और संतुष्ट करने के लिए प्रेरित किया है. वर्तमान समय में ग्राहक बेहतर जीवनशैली की गुणवत्ता चाहते हैं और भविष्य की नकद प्रवाह के आधार पर खरीदारी करने की प्रवृत्ति दिखा रहे हैं. कैरियर के नए अवसरों और वेतन में वृद्धि के कारण, ग्राहकों की आकांक्षाएँ भी बढ़ गई हैं.

मध्यम वर्ग की बढ़ती आबादी, बदलते जनसांख्यिकीय पैटर्न और उभरते मनोवैज्ञानिक बदलाव, विकास के मुख्य घटक बनेंगे. इस बदलाव ने बैंकों के लिए बड़े व्यावसायिक अवसर उत्पन्न किए हैं. प्रतिक्रिया स्वरूप, बैंकों ने नई सेवाओं, उत्पादों और तेज़ एवं प्रभावी वितरण चैनलों के जरिए ग्राहकों तक पहुंचने का प्रयास किया है. आज न केवल ग्राहकों की आदतों और अपेक्षाओं को समझने की तत्काल आवश्यकता है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के ग्राहकों के बीच के अंतर की गहरी समझ भी आवश्यक है. ग्राहकों के अनुकूल उत्पादों और सेवाओं की पेशकश के लिए उनकी ज़रूरतों और अपेक्षाओं को निरंतर आधार पर समझना जरूरी है.

प्रतिस्पर्धी वातावरण में बैंकिंग सेवाओं का विपणन एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है. फिलिप कोटलर के अनुसार:

1. विपणन एक सामाजिक और प्रबंधकीय प्रक्रिया है.
2. इस प्रक्रिया के माध्यम से, व्यक्ति या समूह (जैसे संगठन, समाज या क्लब) अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करते हैं.
3. वे यह सब अन्य उत्पादों के सममूल्य के निर्माण, प्रस्तुति और आदान-प्रदान के जरिए प्राप्त करते हैं.

यहाँ ''उत्पाद'' का तात्पर्य न केवल मूर्त वस्तुओं जैसे निर्मित उत्पादों से है, बल्कि अमूर्त सेवाओं जैसे बैंकिंग सेवाओं (या बैंक उत्पादों) से भी है. इन दोनों का विपणन ग्राहक की आवश्यकताओं और इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है.

विपणन की अनिवार्यता एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य पहलू है, जो आज के प्रतिस्पर्धी युग में संगठनों की सफलता और ग्राहकों की संतुष्टि को सुनिश्चित करता है. विपणन न केवल एक रणनीतिक प्रक्रिया है, बल्कि यह ग्राहकों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को गहराई से समझने की कला भी है.

सफल विपणन का तात्पर्य है, बाजार की बदलती परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाना और उसके अनुरूप अपने उत्पादों और सेवाओं को अनुकूलित करना. यह न केवल ग्राहकों को आकर्षित करने का साधन है, बल्कि उन्हें संतुष्ट और लंबे समय तक जुड़े रहने के लिए प्रेरित करने का माध्यम भी है.

विपणन की अनिवार्यता इस बात में निहित है कि यह एक संगठन को बाहरी प्रतिस्पर्धात्मक माहौल के बदलते आयामों के प्रति तेजी से प्रतिक्रिया करने में सक्षम बनाता है. यह ग्राहकों के साथ विश्वास और निष्ठा का संबंध स्थापित करता है, और संगठन को विकास और प्रगति की दिशा में निरंतर आगे बढ़ने का मार्ग प्रदान करता है.

विपणन की रणनीतियां :

बैंक मार्केटिंग विभिन्न कार्यों का एक समूह है, जो ग्राहकों की वित्तीय जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के उद्देश्य से सेवाएँ प्रदान करने की प्रक्रिया को दर्शाता है. इसका मुख्य उद्देश्य प्रतिस्पर्धी संगठनों (जैसे अन्य बैंकों) की तुलना में अधिक प्रभावी और कुशल तरीके से बैंक के संगठनात्मक उद्देश्यों को पूरा करना है. बैंक विपणन को विशुद्ध रूप से एक सेवा-आधारित विपणन कहा जा सकता है, जिसमें बैंक अपने ग्राहकों को अमूर्त उत्पाद, जैसे कि बैंकिंग सेवाएँ, प्रदान करते हैं. यह प्रक्रिया हमारे दैनिक जीवन में विभिन्न रूपों में दिखाई देती है, जहाँ विपणन का अभ्यास सभी लोग किसी न किसी रूप में करते हैं.

विपणन का सार ग्राहकों को पहचानने, उन्हें बनाए रखने और उनके साथ संबंध स्थापित करने में है. विपणन रणनीतियाँ इस उद्देश्य से बनाई जाती हैं कि ग्राहक लंबे समय तक संगठन से जुड़े रहें. बैंकिंग में विपणन की अवधारणा मुख्य रूप से निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है, जो इसके सफल होने में मदद करते हैं:

- ग्राहक बैंकों के अस्तित्व का आधार हैं.
- बैंकों को ग्राहकों को समझने और उनके साथ स्थायी संबंध बनाए रखने की आवश्यकता है.
- ग्राहकों को संतुष्ट करने वाली सेवाओं को इस तरह से प्रदान और वितरित किया जाना चाहिए कि वे उनकी अपेक्षाओं पर खरे उतरें.

- उत्पाद और सेवाएँ ग्राहकों की आवश्यकताओं और सुविधाओं के अनुसार डिज़ाइन की जानी चाहिए.
- बैंक का प्राथमिक उद्देश्य ग्राहकों की अपेक्षाओं को पूरी तरह से संतुष्ट करना है.

उपसंहार

सार रूप में, विपणन का मूल उद्देश्य ग्राहकों को आकर्षित करना और उनकी संतुष्टि सुनिश्चित करना है. बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने बैंकिंग क्षेत्र को नई विपणन रणनीतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है. इस कारण, यह आवश्यक है कि बैंक से जुड़े सभी कर्मचारी विपणन के महत्व को समझें और इसे स्वीकार करें. बैंकिंग के पारंपरिक तरीके अब वर्तमान समय के संदर्भ में अप्रासंगिक हो चुके हैं. ग्राहकों की अपेक्षाएँ और ज़रूरतें लगातार बदल रही हैं, और वे बेहतर सेवाओं की उम्मीद रखते हैं. ऐसे में, बैंकों को ग्राहकों की वित्तीय आवश्यकताओं की पहचान करनी होगी और ऐसी सेवाएँ प्रदान करनी होंगी जो इन . जरूरतों को पूरी कर सकें.

वित्तीय सेवा क्षेत्र ने अतीत में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखे हैं, जिनसे अविनियमन और वैश्वीकरण जैसे कारकों का उदय हुआ. भारतीय बैंकिंग उद्योग अब एक बदलाव के दौर से गुजर रहा है, और यह समय की मांग है कि बैंक इन बदलते हालात के साथ खुद को ढालें.

राजीव तिवारी
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, भोपाल

अंडमान और निकोबार की यात्रा परिवार के साथ - एक रोमांचक एवं अविस्मरणीय अनुभव

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत का एक अद्भुत पर्यटन स्थल है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक महत्व और रोमांचक जल क्रीड़ाओं के लिए प्रसिद्ध है. जब हमने अपने परिवार के साथ इस स्वर्ग जैसी जगह की यात्रा की, तो यह हमारे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव बन गया. यहाँ की सुनहरी रेत, नीला समुद्र, हरी-भरी पहाड़ियाँ और शांत वातावरण हमें एक अलग ही दुनिया में ले गए. भारत निश्चय ही अद्भुतों का समागम है. यहां हर ऋतु, हर वातावरण तथा विभिन्न प्राकृतिक परिवेशों के साथ भारत की अनेकता में एकता का परिचायक है.

यात्रा की शुरुआत - पोर्ट ब्लेयर

हम सभी अपनी यात्रा को लेकर अति उत्साहित थे. हम सभी के मन

विमान से पोर्ट ब्लेयर की जमीन को देखते ही प्रफुल्लित हो उठे थे. हमारी यात्रा की शुरुआत पोर्ट ब्लेयर से हुई, जो अंडमान और निकोबार की राजधानी है. जैसे ही हमारा विमान वीर सावरकर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा, हमें वहाँ की ताजी और शुद्ध हवा का एहसास हुआ. हवाई अड्डे से निकलते ही चारों ओर हरियाली और नीला समुद्र देखकर मन प्रसन्न हो गया.

सेलुलर जेल - 'काला पानी' की ऐतिहासिक झलक

सबसे पहले, हमने भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े ऐतिहासिक स्थल सेलुलर जेल का दौरा किया, जिसे 'काला पानी' के नाम से भी जाना जाता है. इस जेल में प्रवेश करते ही हमारे मन में एक अजीब-सी शांति और गंभीरता छा गई. दीवारों पर बनी छोटी-छोटी कालकोठरियाँ देखकर हम कल्पना कर सकते थे कि हमारे वीर स्वतंत्रता सेनानियों ने यहाँ कितनी कठिनाइयाँ झेली होंगी. हम सभी की स्वतंत्रता का मोल हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने खून पसीने से चुकाया है.

शाम को हमने साउंड एंड लाइट शो देखा, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं को ध्वनि और रोशनी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया. जब वीर सावरकर और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियाँ गूंजने लगीं, तो हमारे रोंगटे खड़े हो गए. यह अनुभव हमें अतीत में ले गया और हमें अपने इतिहास पर गर्व महसूस हुआ.

हैवलॉक द्वीप - स्वर्ग सा अनुभव

अगले दिन, हम प्रातः पोर्ट ब्लेयर से हैवलॉक द्वीप के लिए रवाना हुए. यह यात्रा फेरी (समुद्री जहाज) से हुई, जो अपने आप में अत्यंत रोमांचकारी थी. चारों ओर समुद्र का अथाह विस्तार देखकर हम मंत्रमुग्ध हो गए. लगभग दो घंटे की इस यात्रा के दौरान ठंडी समुद्री हवा और हल्की लहरों का स्पर्श मन को शांति देने वाला था. ऐसा लग रहा था मानो लहरों ने मन के साथ एक तन्मयता बना ली हो,

पराजय, अपयश, कुटिल आचरण और द्वेष हमारे पास कभी न आएं - अथर्व वेद

और धीरे धीरे मन एकाग्रता के साथ लहरों के भाव में बह रहा था. आम जीवन की भाग दौड़ से सुदूर एक ऐसी जगह जहां चारों ओर केवल अथाह समुद्र में लहरों की आवाज और कभी कभार पक्षियों की आवाज के साथ जो प्राकृतिक छटा में तल्लीनता थी उसे अन्य समुद्री जहाजों के होर्न भंग कर रहे थे. प्रकृति की ऐसी सुंदरता हमने पहली बार अनुभव की थी.

राधानगर बीच - एशिया का सबसे सुंदर समुद्र तट

हैवलॉक पहुंचने के बाद हमने सबसे पहले राधानगर बीच का रुख किया, जिसे एशिया के सबसे सुंदर समुद्र तटों में गिना जाता है. जैसे ही हमने सफेद रेत पर कदम रखा, ऐसा लगा मानो हम किसी सपनों की दुनिया में आ गए हों. नीला, निर्मल समुद्र, लहरों की मधुर आवाज़, और चारों ओर फैली शांति ने हमारे मन को मोह लिया.

हमने यहाँ समुद्र के किनारे चलते हुए सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत नज़ारा देखा. सूरज की किरणें जब पानी पर पड़तीं, तो समुद्र सोने की तरह चमकने लगता था. यह नज़ारा हमें हमेशा याद रहेगा.

स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्कलिंग - समुद्र की गहराइयों में रोमांच

हैवलॉक द्वीप रोमांचक जल क्रीड़ाओं के लिए प्रसिद्ध है, इसलिए हमने स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्कलिंग करने का निर्णय लिया. प्रशिक्षकों ने हमें पूरी सुरक्षा के साथ समुद्र के भीतर जाने का प्रशिक्षण दिया. जैसे ही हम समुद्र की गहराई में उतरे, हमने एक अलग ही दुनिया देखी - रंग-बिरंगी मछलियाँ, सुंदर कोरल रीफ, और नीले पानी की शुद्धता ने हमें चकित कर दिया. ऐसा लगता है मानो प्रकृति की असीम सुंदरता की कल्पना भी करना मानव मास्तिक की सीमाओं से परे है.

यह अनुभव हमें प्रकृति की अनोखी सुंदरता से परिचित करवा गया. समुद्र के नीचे तैरती मछलियाँ और चट्टानों से चिपके जीव-जंतु किसी जादुई दुनिया का हिस्सा लग रहे थे.

बाराटाँग या बारातांँग द्वीप

यह एक अत्यंत अनोखा द्वीप है, यहां जाने के लिए हम प्रात: ही निकलना था. हम लोग यहाँ जहाज से गए थे. रास्ते में हमें मैंग्रोव वन के सुंदर नजारे देखने को मिले. यहां बहुत सारी विविध जनजातियों के लोग रहते हैं. परंतु उनके फोटोग्राफ्स लेना वर्जित है. हमें यहां

पर मड वोल्केनो देखने को मिले. यह एक अत्यंत रोचक घटना है. जहां मिट्टी और गैस सतह पर उबलती रहतीं हैं. यहां का सबसे मनोरम दृश्य हमें परासन द्वीप पर देखने को सूर्यास्त के समय मिले जब हजारों तोते शाम के समय एक साथ वापस आते हैं. वह एक अद्भुत दृश्य है. यहां की लाइमस्टोन केव्स (चूने के पत्थर की गुफाएं) अपने आप में प्रकृति की अद्वितीय कृत्तियां हैं.

नील आईलैंड - शांत और अप्रतिम सुंदरता का संगम

अगले दिन, हम नील आईलैंड पहुँचे, जो अपनी अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता और शांति के लिए जाना जाता है. यह द्वीप हैवलॉक से थोड़ा छोटा है लेकिन अपनी अनूठी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है. यहाँ के समुद्र तटों पर कम भीड़ होती है, जिससे यह स्थान शांति और आराम के लिए परफेक्ट है.

लक्ष्मणपुर और भारतपुर बीच का सौंदर्य

नील आईलैंड के सबसे प्रसिद्ध समुद्र तटों में लक्ष्मणपुर बीच और भारतपुर बीच शामिल हैं. लक्ष्मणपुर बीच पर सूर्योदय का नज़ारा मंत्रमुग्ध कर देने वाला था, जबकि भारतपुर बीच पर हमने ग्लास बॉटम बोट राइड का आनंद लिया, जिसमें समुद्र की गहराइयों में तैरती मछलियों और कोरल रीफ को बिना भीगे देख सकते हैं.

रोस आईलैंड - इतिहास और प्रकृति का अद्भुत मेल

यात्रा के अंतिम चरण में, हमने रोस आईलैंड का दौरा किया, जो कभी ब्रिटिश प्रशासन का मुख्यालय हुआ करता था. आज यह द्वीप अपनी ऐतिहासिक इमारतों के खंडहरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है.

ब्रिटिश युग की झलक

यहाँ ब्रिटिश काल के पुराने चर्च, सरकारी भवनों और बैरकों के अवशेष देखे जा सकते हैं, जो इतिहास प्रेमियों के लिए किसी खजाने से कम नहीं हैं. सबसे दिलचस्प बात यह थी कि इस द्वीप पर हिरण और मोर खुलेआम घूमते हुए दिखाई देते हैं, जिससे यह जगह और भी खास बन जाती है. यहां हमने यह अनुभव किया कि समय की शक्ति अपार है. एक समय संपूर्ण विश्व पर राज करने वाले ब्रिटिश साम्राज्य आज केवल खंडहरों और इतिहास के पन्नों में सिमट कर रह गया है, रह गये हैं तो केवल जन मानस पर ब्रिटिश साम्राज्य के कुकर्मों एवं क्रूरता के निशान. एक अंहकारी मतवाले हाथी की तरह ब्रिटिश साम्राज्य ने भारतीयों के अनेक प्राकृतिक संसाधनों को उजाड़ कर कुचल कर रख दिया. लेकिन हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की भारत के स्वतंत्रता की महत्वकांक्षा को रोंदना तो दूर की बात छू भी न सके. उन्ही स्वतंत्रता संग्रामियों के पराक्रम के फलस्वरूप हम आज स्वतंत्र भारत में सांस ले रहें हैं.

स्थानीय व्यंजन और खरीदारी

यात्रा का मजा तब और बढ़ जाता है जब हमें वहाँ के स्थानीय खाने और संस्कृति को करीब से जानने का मौका मिले. क्योंकि हमारी संस्कृति हमारे स्थानीय व्यंजनों तथा स्थानीय उत्पादों में रची बसी होती है. हमने यहाँ सीफूड का आनंद लिया, जिसमें मसालेदार ग्रिल्ड फिश, प्रॉन करी और नारियल के दूध से बनी स्वादिष्ट व्यंजन शामिल थे. इसके अलावा, स्थानीय बाजार से हमने मोतियों की ज्वेलरी, लकड़ी की कलाकृतियाँ और नारियल से बने स्मृति चिन्ह भी खरीदे. यहां के स्थानीय बाजारों के भ्रमण का अनुभव अत्यंत सुंदर था.

यात्रा का समापन - खूबसूरत यादों के साथ

यह यात्रा हमारे परिवार के लिए बेहद खास रही. अंडमान और निकोबार की प्राकृतिक सुंदरता, ऐतिहासिक स्थल, रोमांचक गतिविधियाँ और शांत वातावरण ने हमें रोज आम जीवन से एक अलग ही दुनिया में पहुँचाया.

जब हम वापसी की फ्लाइट में बैठे, तो हमारे दिल में इस खूबसूरत जगह की यादें बसी हुई थीं. हमने न केवल नए अनुभवों का आनंद लिया, बल्कि परिवार के साथ बिताए गए इन पलों को हमेशा के लिए संजो लिया.

अगर आप कभी प्रकृति के करीब रहकर शांति और रोमांच का अनुभव करना चाहते हैं, तो अंडमान और निकोबार आपके लिए एक उपयुक्त स्थान है. भारत में पर्यटन क्षेत्र अनेक हैं और हर क्षेत्र अपने आप में श्रेष्ठ है. यह हमारा सौभाग्य है कि हमें भारत जैसी पावन धरा पर जन्म मिला.

क्या आप भी इस स्वर्ग जैसी जगह की यात्रा करने के लिए तैयार हैं?

सुश्री आशा कुमारी
प्रबंधक
सेन्ट नियो

आइए आपको मुंबई की सैर कराएँ ....

गेटवे ऑफ इंडिया

मुंबई के सबसे बेहतरीन पर्यटन स्थलों में गेटवे ऑफ इंडिया का नाम शामिल है. अरब सागर के किनारे अपोलो बंदर तट पर बनाई गई यह आलीशान संरचना हमें याद दिलाती है कि, यह शहर भी कभी अंग्रेजों के अधीन था. बेसाल्ट के बने 26 मीटर ऊंचे इस प्रवेशद्वार के निर्माण में जीत की झलक दिखाने वाले रोमन आर्किटेक्चर के मेहराब के साथ-साथ पारंपरिक हिंदू और मुस्लिम डिजाइनों का उपयोग किया गया है. किंग जॉर्ज V और क्वीन मैरी 1911 में ब्रिटिश से भारत आए थे, और उनके स्वागत के लिए ही इसे बनाया गया था. इसके मेहराब के पीछे सीढ़ियां बनी हैं, जो पर्यटकों को अरब सागर की ओर ले जाती हैं. गेटवे ऑफ इंडिया आने वाले पर्यटक यहाँ नाव की सवारी, फेरी की सवारी या प्राइवेट याट की सवारी का आनंद ले सकते हैं. अगर आप समुद्र के खूबसूरत नज़ारों, ताज पैलेस होटल, डॉक (गोदी) और बंदरगाह को देखना चाहते हैं, तो यह आपके लिए सबसे अच्छी जगह है.

एलीफेंटा गुफाएं

एलीफेंटा केव्ज जाने के लिए हमें गेटवे ऑफ इंडिया से नाव द्वारा जाना होगा. एलीफेंटा द्वीप पर गुफाएँ है. इस द्वीप पर सात गुफाएँ हैं. यह गुफाएँ भगवान शिव का गौरवशाली निवास स्थान तथा हिन्दू संस्कृति का प्रतीक है. इन गुफाओं में त्रिमूर्ति सदाशिव यानि तीन मुखी शिव की 6.1 मीटर की लंबी मूर्ति सबसे प्रसिद्ध है. अन्य गुफाओं में भी शिव, पार्वती और अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और नक्काशी की गई है. यहाँ जो सात गुफाएँ है उनमें से पांच गुफाएँ हिन्दू धर्म से संबंधित है तथा दो बौद्ध धर्म से जुडी हैं. हर साल फरवरी में, इन गुफाओं पर दो दिवसीय संगीत और नृत्य उत्सव आयोजित किया जाता है. एलीफेंटा द्वीप मुंबई के तट से कुछ दूर एक आइलैंड है. यह भारत के सबसे मनोहर और प्राचीन स्थानों में से एक है. यदि आप मुंबई के दर्शनीय स्थल की सैर पर निकले हैं तो आपको एलीफैंटा की खूबसूरती के दर्शन करना काफी ज़रूरी है. एलीफैंटा की सबसे रहस्यमयी बात ये है कि आज तक किसी को यह नहीं पता की इसकी रचना किसने की. यह दर्शनीय स्थल पत्थरों से काट कर बना है और इसकी वास्तुकला देखते ही बनती है. इसकी शोभा आज भी सैलानियों को भावविभोर कर देती है. अगर आप मुंबई के शोर से कुछ दूर शांति से समय बिताना चाहते हैं तो एलीफेंटा गुफाएं आपके लिए सबसे बेहतरीन जगह है.

जहांगीर आर्ट गैलरी

जहांगीर आर्ट गैलरी की स्थापना 1952 में की गई थी. यह एक प्रमुख कला प्रदर्शनी स्थल है. यह समकालीन भारतीय कला से जुड़ा हुआ है. इस गैलरी में चित्रकारों, मूर्तिकारों, प्रिंट निर्माताओं , शिल्पकारों, सिरेमिक कलाकारों, फोटोग्राफरों और बुनकरों की प्रदर्शनी आयोजित की जाती है. इसकी स्थापना सर कावासजी जहांगीर ने के के हेब्बार और होमी भाभा के आग्रह पर की थी. इसका इतिहास भारतीय कला के पुनर्जागरण से जुडा हुआ है. संग्रहालय में आपको एम एफ हुसैन जैसे लोकप्रिय कलाकारों की कृतियाँ भी देखने को मिलेंगी.

मरीन ड्राइव

मरीन ड्राइव दक्षिण मुंबई में स्थित है. यह एक 3 किलोमीटर लम्बी छह मार्ग वाली सड़क है जो दक्षिण मुंबई से उत्तर मुंबई के तट तक फैली हुई है. मालाबार हिल के तलहटी पर स्थित यह सी अकार की सड़क नरीमन पॉइंट और बाबुलनाथ को जोड़ती है. यह मुम्बई के पर्यटन स्थलों में से एक है, मरीन ड्राइव मुंबई वासियों और सैलानियों को आकर्षित करता है. लोग यहाँ पर सुबह और शाम सैर करने आते हैं. यहाँ से ढलते हुए सूरज का मनोहर दृश्य देखा जा सकता है.

हाजी अली की दरगाह

हाजी अली शाह बुखारी एक धनी मुस्लिम व्यापारी थे. जो बाद में अपनी संपत्ति का त्याग कर सूफी संत बन गए. कहा जाता है कि उन्होंने मक्का की यात्रा की थी और अपनी मृत्यु के बाद उन्होंने उनके शव को समुद्र में डालने की इच्छा जताई थी. हाजी अली दरगाह की स्थापना उसी स्थान पर की गई जहाँ उनका शव तैरकर आकर ठहरा था. हाजी अली की दरगाह 1431 में बनाया गया था. सभी धर्म के लोगों की इस दरगाह में काफी आस्था है. इस दरगाह के दर्शन करने सभी धर्म के लोग आते हैं. कहा जाता है कि यहां जो जाता है कोई खाली हाथ नहीं लौटाता. यह दरगाह समुद्र पर बनाई गई है. समुद्र का पानी जब उपर आता है तब भी दरगाह के अंदर बिलकुल पानी नहीं भरता, यह हैरान करने वाली बात है. समुद्र के बीचो-बीच होने के बावजूद भी लहरें दरगाह में जाने से कतराती है.

नेहरू विज्ञान केंद्र, वर्ली

1977 में, साठ के दशक के उत्तरार्ध में विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय के रूप में परिकल्पित नेहरू विज्ञान केंद्र ने ऐसे सार्वजनिक संस्थानों में विश्व के रुझानों से मेल खाने के लिए भारत के सबसे बड़े इंटरैक्टिव विज्ञान केंद्र के रूप में अंतिम रूप ले लिया. केंद्र ने 1977 में अपनी पहली अर्ध-स्थायी प्रदर्शनी 'लाइट एंड साइट' खोली और इसके बाद 1979 में दुनिया के पहले विज्ञान पार्क को अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के दौरान खोला. 11 नवंबर 1985 को प्रधान मंत्री राजीव गांधी द्वारा अंततः पूर्ण विकसित विज्ञान केंद्र को जनता के लिए खोल दिया गया.

नेहरू विज्ञान केंद्र, देश के सबसे बड़े विज्ञान केंद्र में पौधों, पेड़ों और झाड़ियों की किस्मों के साथ 8 एकड़ (32,000 वर्ग मीटर) का विशाल विज्ञान पार्क है. पार्क में ऊर्जा, ध्वनि, सिनेमाटिक, यांत्रिकी, परिवहन आदि पर 500 से अधिक व्यावहारिक और संवादात्मक विज्ञान प्रदर्शनी लगाई गई हैं. अपनी अनूठी वास्तुकला के साथ एनएससी भवन में विभिन्न विषयों पर कई स्थायी विज्ञान प्रदर्शनियां हैं.

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (NCSM), नेहरू विज्ञान केंद्र, मुंबई की मूल संस्था है, जिसके पूरे देश में 25 विज्ञान केंद्र/संग्रहालय हैं, जिसके पास उच्च गुणवत्ता वाली विज्ञान प्रदर्शनी की अवधारणा, डिजाइन, विकास और आयोजन के लिए सबसे अच्छा बुनियादी ढांचा और कुशल जनशक्ति है.

हैंगिंग गार्डन

इस उद्यान का निर्माण 1881 में फिरोजशाह मेहता, एक प्रसिद्ध राजनीतिक नेता और कार्यकर्ता द्वारा जलाशयों को ढकने और प्रदूषण को रोकने के लिए किया गया था. 1915 में उनकी मृत्यु के बाद यह उद्यान उन्हें समर्पित कर दिया गया. हैंगिंग गार्डन मुंबई का एक खूबसूरत और शांत जगह है. मालाबार पहाड़ी के पश्चिमी छोर पर स्थित हैंगिंग गार्डन्स ऑफ़ मुंबई बहुत ही जाने माने मुम्बई के पर्यटन स्थलो में से एक है. यह गार्डन पेड़ों से घिरा हुआ है और इसकी हरियाली पर्यटकों को आकर्षित करती है. इसके बगीचे के बेहद ही सुन्दर ढंग से जानवरों की आकृति में कटे हुए हैं. 'ओल्ड वीमेनस शू' और 'बूट हाउस', पशु आकार की हेजेज, फुल घडी, सूर्यघडी जैसी आकर्तियाँ आपका मन मोह लेंगी यदि आपको सूर्योदय देखने का मन है तो यहाँ ज़रूर आएं.

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस

छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस जिसे पहले विक्टोरिया टर्मिनस (वीटी) के नाम से जाना जाता था. यह ऐतिहासिक रेलवे स्टेशन का निर्माण 1887 में ब्रिटिश वास्तुकार एफ डब्ल्यू स्टीवंस द्वारा किया गया था. इस स्टेशन का नाम महारानी विक्टोरिया के नाम पर विक्टोरिया टर्मिनस रखा गया. 1996 में इसे बदल कर छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस कर दिया गया था. इस इमारत के ऊंचे मेहराब, नुकीले टावर और गुंबद तथा जटिल पत्थर की नक्काशी एक भव्य यूरोपीय महल जैसा एहसास दिलाती है. यह मुंबई का सबसे व्यस्त और सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन है, लेकिन इसकी अविश्वसनीय रूप से सुंदर संरचना ने इसे देखने लायक बना दिया है.

कोस्टल रोड

कोस्टल रोड मुंबई के पश्चिमी तट पर 8 लेन वाला, 29.2 किलोमीटर लंबा एक अलग एक्सप्रेसवे है जो दक्षिण में मरीन लाइन्स को उत्तर में कांदिवली से जोड़ता है. इसका पहला चरण, जिसका उद्घाटन 11 मार्च, 2024 को किया गया, प्रिंसेस स्ट्रीट फ्लाईओवर से बांद्रा-वर्ली सी लिंक के वर्ली छोर तक 10.58 किलोमीटर का खंड है.

वर्ली सी लिंक

बान्द्रा वर्ली सी लिंक अरब सागर के ऊपर 5.6 किलोमीटर लंबा आर्क आकार का केबल स्टे ब्रिज है. रात में यह पुल और भी अधिक आकर्षक लगता है. जब इसे रोशन किया जाता है. खुले समुद्र के बीच बना यह भारत का पहला केबल स्टे ब्रिज है. यह पुल बान्द्रा और वर्ली इलाकों को जोडता है. इस वर्ली सी लिंक को राजीव गांधी सी लिंक भी कहा जाता है. इस पुल के माध्यम से लोगों का यात्रा करना सरल हो गया है साथ ही समय भी कम लगता है. इस पुल के निर्माण की शुरुआत 2000 के दशक में हुई और इसे 2009 में जनता के लिए खोला गया.

महालक्ष्मी मंदिर

इस मंदिर का निर्माण 1831 में हिन्दू व्यापारी धकजी दादाजी ने करवाया था. महालक्ष्मी में त्रिदेवी महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की प्रतिमाएँ है. यह मुंबई के सर्वाधिक प्राचीन धर्मस्थलों में से एक है. माँ लक्ष्मी को धन की देवी माना जाता है. महालक्ष्मी मंदिर के मुख्य द्वार पर सुंदर नक्काशी की गई है. मंदिर परिसर में विभिन्न देवी-देवताओं की आकर्षक प्रतिमाएँ स्थापित है. मंदिर का इतिहास काफी रोचक है. अंग्रेजो ने जब महालक्ष्मी क्षेत्र को वर्ली क्षेत्र से जोडने के लिए बीच कैंडी मार्ग को बनाने की योजना बनाई तब समुद्र की तूफानी लहरों के चलते यह योजना खटाई में पड गई. उस समय देवी लक्ष्मी देवी ठेकेदार रामजी शिवाजी के सपने में प्रकट हुई और उन्हे समुद्र तल से देवियों की तीन प्रतिमाएँ निकालकर मंदिर में स्थापित करने का आदेश दिया. रामजी ने ऐसा ही किया और बीच कैंडी मार्ग का निर्माण सफलतापूर्वक हुआ. यहाँ आने वाले हर भक्त को यह दृढ विश्वास है कि माता उनकी हर इच्छा जरूर पूरी करेंगी.

सिद्धिविनायक मंदिर

प्रभादेवी में स्थित, सिद्धिविनायक भगवान गणेश को समर्पित एक भव्य मंदिर है. सिद्धिविनायक गणेश जी का सबसे लोकप्रिय रूप है. गणेश जी की जिन प्रतिमाओं की सूंड दाईं तरफ मुड़ी होती है वे सिद्धपीठ से जुडी होती है और उनके मंदिर सिद्धिविनायक मंदिर कहलाते हैं सिद्धिविनायक की महिमा अपरंपार है , वे भक्तों की मनोकामना को तुरंत पूरा करते हैं. हर साल लाखों भक्त यहां प्रार्थना करने और भगवान की पूजा करने आते हैं, सितंबर में गणेश चतुर्थी उत्सव के दौरान, मंदिर पूरे भारत से आने वाले भक्तों से भर जाता है. दरवाजे और सोने की परत चढ़ी आंतरिक छत की वास्तुकला और लकड़ी की नक्काशी आकर्षक और सुंदर लगती है.

मुंबा देवी मंदिर

मुंबा देवी का मंदिर अत्यंत आकर्षक है. इसमें स्थापित माता की मूर्ति काफी भव्य है. मुंबा देवी मुंबई शहर की देवी है. मुंबई नाम मुंबा देवी से लिया गया है. इस मंदिर का निर्माण 1675 में पूर्व बोरीबंदर खाडी के मुख्य लैंडिंग स्थल के पास अंग्रेजी फोर्ट सेंट जॉर्ज की उत्तरी दीवार के सामने एक हिन्दु महिला द्वारा किया गया था जिसका नाम भी मुंबा था. देवी मुंबा मराठी भाषी कोली लोगों की संरक्षक थी. यह हिन्दुओं के लिए एक पवित्र तीर्थ स्थल और पूजा स्थल है और इसलिए प्रतिदिन सैंकडो लोग देवी के दर्शन के लिए आते हैं.

बांद्रा का किला

बांद्रा का किला, जिसे कास्टेला डी अगुआडा के नाम से भी जाना जाता है, मुंबई में पुर्तगालियों द्वारा बनाया गया एक ऐतिहासिक किला है. यह बांद्रा रिक्लेमेशन के अपस्केल क्षेत्र में माहिम खाड़ी के पास स्थित है. यह मुंबई में सबसे अधिक देखे जाने वाले पर्यटन स्थलों में से एक है, जहाँ से अरब सागर और बांद्रा-वर्ली सी लिंक का सुंदर दृश्य दिखाई देता है. बांद्रा किला पुर्तगालियों द्वारा 1640 ई. में बनाया गया था, ताकि वे अपनी बस्ती की रक्षा कर सकें और मुंबई बंदरगाह को आक्रमणकारियों से बचा सकें. कास्टेला डी अगुआडा नाम का अर्थ है ''जल बिंदु का किला'', क्योंकि यह वहाँ पर खड़े होने वाले जहाजों के लिए ताजे पानी का स्रोत था. किले को फोर्टे डी बांडोरा के नाम से भी जाना जाता था, जिसका अर्थ है ''बांडोरा का किला'', जो बांद्रा का पुर्तगाली नाम था.

18वीं शताब्दी की शुरुआत में अंग्रेजों ने किले को आंशिक रूप से नष्ट कर दिया था, ताकि मराठों को शहर पर हमला करने के लिए इसे आधार के रूप में इस्तेमाल करने से रोका जा सके. मराठों ने 1739 ई. में किले पर कब्ज़ा कर लिया, लेकिन 1774 ई. में प्रथम एंगलो-मराठा युद्ध में वे इसे अंग्रेजों से हार गए. इसके बाद किले की उपेक्षा की गई और समय के साथ यह खंडहर में तब्दील हो गया.

किले का जीर्णोद्धार बांद्रा बैंडस्टैंड रेजिडेंट्स ट्रस्ट द्वारा 2003 में किया गया था, ताकि खंडहरों को संरक्षित किया जा सके और जगह की सुंदरता को बनाए रखा जा सके. किला अब एक धरोहर स्थल है और फोटोग्राफी और फिल्म शूटिंग के लिए एक लोकप्रिय स्थान है.

माउंट मेरी

माउंट मेरी चर्च एक सदी से भी ज्यादा पुराना है. इसे बेसिलिका ऑफ आवर लेडी ऑफ द माउंट के नाम से भी जाना जाता है. यह मुंबई के बांद्रा में स्थित है. यह एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है और स्थानीय लोगों और आगुंतकों दोनों के लिए ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व रखता है. ऐसा माना जाता है कि इस चर्च का निर्माण मूल रूप से 16वीं शताब्दी की शुरुआत में पुर्तुगाली जेसुइट्स द्वारा किया किया. यह चर्च बेसिलिका मदर मैरी को समर्पित है. ऐसा कहा जाता है कि इस चर्च में रखी गई मैरी की मुर्ति 16वी शताब्दी की है. इस चर्च में हर वर्ष सितम्बर माह में एक मेला लगता है. यह मेला विभिन्न धर्मों और समुदायों के

हजारों भक्तों को आकर्षित करता है. माउंट मैरी पर्व 8 सितंबर के बाद पहले रविवार को मनाया जाता है. जो मरियम के जन्म का प्रतीक है. यह चर्च एक पहाडी पर स्थित है, जहाँ से अरब सागर और आसपास के बांद्रा क्षेत्र का शानदार नजारा दिखाई देता है.

जीजामाता उद्यान

वीरमाता जीजाबाई भोसलें उद्यान जिसे रानी बाग के नाम से जाना जाता है. यह मुंबई का सबसे पुराना सार्वजनिक उद्यान है. 1861 में स्थापित इस उद्यान में 800 से अधिक पौधों की प्रजातियाँ और विभिन्न जानवरों का चिडियाघर है, जो पर्यटकों को आकर्षित करता है. इसे चिडिया घर भी कहा जाता है. यहाँ मगरमच्छ और घडियाल भी है. बच्चों को यह उद्यान काफी आकर्षित करता है. रानी बाग में पेंगविन का जोडा हाल ही में रखा गया है. सियोल से सात हम्बोल्ट पेंगविन लाए गए थे. जिसे बच्चे ज्यादा पसंद करते हैं. यह उद्यान सोमवार से रविवार तक सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहता है. आप इस उद्यान में इंग्लैंड के तत्कालीन राजा एडवर्ड सप्तम की प्रतिमा और 75 फीट उंचे डेविड ससून क्लॉक टॉवर को भी देख सकते हैं.

जुहू बीच

जुहू बीच मुंबई के सबसे लोकप्रिय और ऐतिहासिक समुद्र तटों में से एक है. यह एक सागर तट है. जुहू बीच के साथ-साथ जुहू चौपाटी भी काफी लोकप्रिय है. ज्यादातर हिन्दी फिल्मों की शुटिंग इस बीच पर ही होती है. इस बीच के आसपास कई फिल्मी कलाकार भी रहते है. अगर आप जुहू बीच की सैर पर निकले हैं तो शाम होने का इंतज़ार करें क्यूंकि यहाँ के बेहद रमणीय सूर्यास्त को देखे बिना आपका जुहू बीच आना अधूरा सा रह जायेगा. जुहू बीच के आस पास भी इस्कॉन मंदिर, हौली क्रॉस चर्च, महालक्ष्मी मंदिर, और सिद्धि विनायक जैसे मुंबई के धार्मिक स्थल हैं. जब आप जुहू की सैर पर निकलें तो अपना कैमरा लाना बिलकुल न भूलें. यहाँ खाने के लिए गरमा गरम भुट्टे, भेल, पानी पूरी आदि मिलता है.

इस्कॉन मंदिर

श्री श्री राधा रासबिहारी जी मंदिर, जो इस्कॉन मंदिर के रूप में लोकप्रिय है. मुंबई में सबसे लोकप्रिय और सबसे सुंदर हिंदू मंदिरों में से एक है. चौपाटी क्षेत्र में स्थित, यह मंदिर 1978 में 4 एकड़ भूमि पर बनाया गया था और यह भगवान कृष्ण और राधा को समर्पित है. यह एक विशाल संगमरमर का मंदिर है इसमें सभागार, रेस्तरां और के जुड्वाँ सात मंजिला गेस्ट हाउस शामिल है. इस्कॉन में प्रत्येक रविवार को युवा कार्यक्रम ''सेल्फ एक्सीलेंस'' आयोजित किया जाता है. शांति और प्रार्थना के लिए यह निश्चित रूप से अच्छी जगह है. लाखों भक्त इस मंदिर में पूजा करने और पूर्ण शांति से ध्यान करने के लिए आते हैं.

पवई झील

मुंबई में घूमने वाली जगह में से एक सबसे ख़ूबसूरत जगह है, पवई झील. पवई की वादियों में बसी ये छोटी सी कृत्रिम झील शोर भरे शहर में शान्ति का एक अलग ही एहसास दिलाती है. इस तालाब में मगरमछ, बतख, बुलबुल, और न जाने कितने प्रकार के जीव जंतु रहते हैं. यहाँ पर आप एक सुगम नौका यात्रा भी कर सकते हैं. या फिर आप शान्ति से बैठ कर पवई लेक गार्डन से अद्भुत नज़ारों का आनंद ले सकते हैं.

संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान

यह पार्क वनस्पतियों और जीवों की कई लुप्तप्राय प्रजातियों का घर है. पार्क में वन क्षेत्र में 1000 से अधिक पौधों की प्रजातियाँ जल पक्षियाँ तथा भूमि जीव की प्रजातियाँ है . 87 वर्ग किमी में फैला, यह मुंबई शहर का निकटतम राष्ट्रीय उद्यान है, जिसे 1996 में स्थापित किया गया था. इसमें शानदार वन भूमि, झील और वन्य जीवन शामिल हैं; संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान ने साहसिक प्रेमियों के बीच जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की है और दोस्तों के साथ मुंबई में घूमने के लिए सर्वोत्तम स्थानों में से एक है. यहां पर जंगल की सैर, ट्रैकिंग, नौकायन, बाघ और शेर की सफारी और राष्ट्रीय उद्यान के भीतर स्थित कन्हेरी गुफाओं तक पैदल यात्रा का आनंद ले सकते है. यहाँ की टॉय ट्रेन बच्चों को काफी आकर्षित करती है.

पैगोडा

यह एक विपासना का ध्यान केन्द्र है जो कि गौतम बुद्ध के विचारों और ज्ञान का प्रसार कर रहा है. मुंबई के इस पैगोडा का उद्घाटन 2009 में भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा किया गया था. इस पैगोडा में बिना पिलर का एक केन्द्रीय हॉल है. इस हॉल में 8000 लोग एक साथ बैठ कर अपना ध्यान लगा सकते है. यह विश्व का सबसे बड़ा पैगोडा है. जो कि 294 फुट उँचा और 61,300 वर्गफुट क्षेत्र में फैला हुआ है. इसकी छत 86 फुट उँची है. जिसमें बुद्ध के अवशेष रखे हुए हैं. आप मुंबई में ध्यान करने के लिए कोई जगह डूढ़ रहे हैं या फिर फोटोग्राफी की सैर पर निकले हैं तो गोराई क्रीक और अरब सागर के बीच स्थित इस जगह जाना न भूलें.

एस्सेल वर्ल्ड

64 एकड़ में फैला एस्सेल वर्ल्ड भारत का ही नहीं बल्कि विश्व के सबसे बड़े तथा लोकप्रिय मनोरंजन पार्कों में से एक है. यहाँ पर 79 तेज और रोमांचक झूले बने हुए हैं. रोमांचक सवारी, वॉटर स्लाइड, मैरी गो राउंड, प्ले पूल, गो-कार्टिंग और रोलर कोस्टर के साथ; एस्सेल वर्ल्ड एक वंडरलैंड की तरह दिखता है और बच्चों को यहाँ पर स्केटिंग आईएनएस और डरावना होटल खेल भी उपलब्ध है. जो बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं. एस्सेल वर्ल्ड पार्क की शुरुआत सन 1999 में की थी. यहाँ वाटर पार्क भी है.

मुंबई में इसके अलावा और भी दर्शनीय स्थल है जिसे आप देखकर आनंद ले सकते हैं.

संजय कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (सू.प्रौ.)
एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई

जिस देह से श्रम नहीं होता, पसीना नहीं निकलता, सौंदर्य उस देह को छोड़ देता है - लक्ष्मीनारायण मिश्र

अर्धांगिनी

सेवानिवृत्ति के बाद रामलाल जी ने अपनी बीवी रामकटोरी के साथ एक बैंक में ज्वाइंट अकाउंट खुलवाया.

ज्वाइंट अकाउंट में रिटायरमेंट बेनिफिट के 50 लाख रुपये जमा हुये और नियमित पेंशन भी प्रारंभ हो गई.

रामलाल जी ने एक दिन बीवी को ऑनलाइन बैंकिंग का सारा सिस्टम समझाया. साथ ही ओटीपी का महत्व भी बताया और बताया कि जब तक मैं जिंदा हूं. तब तक इस पर आधा हक तुम्हारा भी है, और सख्त हिदायत भी दी कि, किसी भी स्थिति में कभी भी किसी के साथ ओटीपी शेयर न करना.

एक दिन रामलाल जी अपना मोबाइल घर पर ही भूलकर कहीं बाहर निकल गए. तीन-चार घंटे बाद जब वे लौटे तो आते ही रामकटोरी से पूछा: '' कहीं से कोई अनजान कॉल तो नहीं आया था?

रामकटोरी: बैंक वालों का कॉल आया था.

रामलाल जी (घबराते हुए): ''ओटीपी से संबंधित तो नहीं था?

रामकटोरी (गर्व से): ''अरे वाह! आप तो बड़े स्मार्ट हो. हां ओटीपी ही पूंछ रहे थे और कह रहे थे कि हमारे बैंकिंग स्टेटस को सिल्वर से हटाकर डायमंड में डालना है जो हमारे लिए बहुत लाभकारी रहेगा.

रामलाल जी (मंद स्वर में): ''हे भगवान! कहीं तुमने उनको ओटीपी तो नहीं बता दिया?

रामकटोरी: ''अरे! जब बैंक वाले खुद पूछ रहे थे तो क्यों न बताती ?

रामलाल जी का सिर चकराया और वो धम्म से सोफे पर बैठ गये?

रामलाल जी हड़बड़ाकर मोबाइल हाथ में लेकर बैंक अकाउंट चेक करने लगे और साथ ही बड़बड़ाये: ''अरी महातमन, गये अपने लाखों रुपये, आज गये....''

लॉगिन के बाद चैक करने पर रामलाल जी सुखद आश्चर्य से भर उठे क्योंकि उनका अकाउंट सही सलामत था और साथ ही बैंक ने आज ब्याज की रकम भी जोड़ दी थी. फिर रामलाल जी ने रामकटोरी से पूछा: मोबाइल पर क्या तुमने सही ओटीपी बताया था?

रामकटोरी: ''हां जी, बिल्कुल सही बताया था. बैंक वाले बार-बार मुझसे कह रहे थे कि, फिर से चैक करके सही ओटीपी बताओ? लेकिन मैंने कहा कि चैक करके ही बताया है. फिर पता नहीं क्या हुआ, फोन पर बोलने वाला मुझ पर चिल्लाने लगा और गालियां बकने लगा तो मैंने भी गुस्से में आकर फोन काट दिया.

रामलाल जी: क्या था ओटीपी?

रामकटोरी: ''ओटीपी तो 8406 आया था. लेकिन अपना जॉइन्ट अकाउंट है न, तो मैंने अपना आधा ओटीपी 4203 ही उन्हें बताया.

'रामलाल जी ने अपनी बीवी का माथा चूम लिया और उनकी पीठ थपथपाते हुये बोले कि बीवी हो तो ऐसी, वाकई में तुम मेरी अर्धांगिनी हो.'

अजय गुप्ता
वरिष्ठ शाखा प्रबंधक
पिंजौर शाखा, चंडीगढ़

तनाव और ग्राउंडिंग तकनीक द्वारा तनाव प्रबंधन

आज की तेज़ रफ्तार जीवनशैली में, तनाव एक अवश्यंभावी (inevitable) हिस्सा बन चुका है. तनाव, जिसे अंग्रेजी में Stress कहा जाता है, एक मानसिक और शारीरिक स्थिति है जो तब उत्पन्न होती है जब हम किसी चुनौती या समस्या का सामना करते हैं. यह हमारे दैनिक जीवन का एक सामान्य हिस्सा है और इसे पूरी तरह से टाला नहीं जा सकता.

तनाव हमारे शरीर की ''सामना करो या भाग जाओ'' Fight or Flight प्रतिक्रिया का एक स्वाभाविक हिस्सा है, जो तब उत्पन्न होता है जब हम किसी खतरे को महसूस करते हैं. इस प्रतिक्रिया में कोर्टिसोल और एड्रीनलीन जैसे तनाव हार्मोन जारी होते हैं, जो हृदय गति (Palpitation), रक्तचाप (Blood Pressure) और ऊर्जा के स्तर को बढ़ाते हैं. यद्यपि एक सीमित मात्रा में तनाव फायदेमंद हो सकता है - जैसे कि हमें एक निश्चित समय सीमा मे कोई काम पूरा करना , निर्धारित लक्ष्य को समय पर पूरा करना या कठिन परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करना - लेकिन यदि यह लगातार बना रहे, तो यह गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है.

तनाव कार्यस्थल की चुनौतियों, पारिवारिक जिम्मेदारियों, आर्थिक कठिनाइयाँ, स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ या व्यक्तिगत समस्याओं से उत्पन्न हो सकता है. **अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन** के अनुसार, यदि तनाव लंबे समय तक बना रहे, तो यह हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, जिससे हमारी उत्पादकता भी प्रभावित होती है . निरंतर तनाव मे रहने से चिंता, घबराहट, चिड़चिड़ापन, ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई, अकेलापन अनुभव करना , सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, थकान, नींद न आना जैसी जटिल समस्याएं हो सकती हैं.

तनाव जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है, लेकिन इसे सही तरीके से प्रबंधित करना जरूरी है. तनाव को पहचानना और उसे कम करने के उपाय अपनाना हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है. तनाव प्रबंधन की विभिन्न रणनीतियों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. **संज्ञानात्मक (Cognitive) तकनीकें:** नकारात्मक विचारों को पुनर्गठित करने के लिए संज्ञानात्मक-व्यवहारात्मक (cognitive-behavioural) तकनीकों का उपयोग.
2. **शारीरिक (Physical) तकनीकें:** व्यायाम, योग आदि गतिविधियों में संलग्न रहना.
3. **भावनात्मक (Emotional) तकनीकें:** माइंडफुलनेस और विश्राम तकनीकों का अभ्यास.
4. **सामाजिक सहयोग (Social Support):** मित्रों और परिवार से भावनात्मक समर्थन (emotional support) प्राप्त करना.

इन सभी तकनीकों में से, **ग्राउंडिंग तकनीकें** सरल और प्रभावी होने के कारण लोकप्रिय हो रही हैं. ये तकनीकें व्यक्ति को अपनी इंद्रियों के माध्यम से वर्तमान क्षण से जोड़ती हैं, जिससे तनावपूर्ण परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखना संभव हो जाता है.

ग्राउंडिंग तकनीक कैसे काम करती है -

ग्राउंडिंग तकनीकें मुख्य रूप से पाँच इंद्रियों ध्वनि, स्पर्श, गंध, स्वाद और दृष्टि का उपयोग करती हैं ताकि आपको तुरंत वर्तमान क्षण से जोड़ सकें. उदाहरण के लिए, एक गाना गाना, अपने हाथों पर लोशन लगाना, या खट्टा कैंडी चूसना ऐसी ग्राउंडिंग तकनीकें हैं जो आपके मन में चल रहे विचारों से ध्यान हटाकर आपको वर्तमान में लाने में मदद करती हैं. ये तकनीकें आपको सीधे और तुरंत वर्तमान क्षण से जोड़ती हैं. साथ ही, ये तकनीकें इस संभावना को कम करती हैं कि आप फ्लैशबैक या डिसोसिएशन में चले जाएं.

ग्राउंडिंग व्यक्तिगत होती है. जो एक व्यक्ति के लिए काम करता है, वह दूसरे के लिए चिंता या फ्लैशबैक का कारण बन सकता है. इसलिए,

आपको यह समझने के लिए प्रयास करना होगा कि कौन-सी ग्राउंडिंग तकनीकें आपके लिए सबसे प्रभावी हैं. उन तरीकों पर ध्यान दें जिन्हें आप पहले से उपयोग कर रहे हैं और देखें कि क्या आप उन्हें अपनी ग्राउंडिंग तकनीकों के रूप में उपयोग कर सकते हैं.

ग्राउंडिंग तकनीक: 5-4-3-2-1 विधि

वर्तमान क्षण से जुड़ने के लिए, कुछ ऐसा करें जो आपका पूरा ध्यान ''अभी और यहीं'' पर केंद्रित करे. ग्राउंडिंग करते समय अपनी आँखें खुली रखें ताकि आप अपने आस-पास की हर चीज़ से अवगत रहें.

यदि आप महसूस करते हैं कि आप फ्लैशबैक या डिसोसिएटिव स्थिति में जा रहे हैं तो यह विधि आपको अपने आस-पास के वातावरण पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है, विशेष रूप से तब जब आप तनावग्रस्त या अधीर (overwhelmed) महसूस करते हैं. आइए इसे चरणबद्ध तरीके से समझते हैं:

1. **पांच चीजें देखें (5 Things You Can See)**

   पहला कदम है अपने आस-पास की पाँच चीजों को देखना. यह कोई भी चीज़ हो सकती है जो आपके दृष्टि में है, जैसे कि कुर्सी, दीवार पर पेंटिंग, पेड़, या आपके हाथ की अंगूठी. ध्यान से इन पाँच चीजों को देखें और उनके बारे में सोचें. यह दृष्टि इंद्रिय का उपयोग करता है और आपको वर्तमान क्षण में लाने में मदद करता है.

2. **चार चीजें छूएं (4 Things You Can Touch)**

   दूसरा कदम है चार चीजों को छूना. यह चीजें भी कोई भी हो सकती हैं जो आपके आसपास हैं, जैसे कि आपका कपड़ा, एक किताब, मेज की सतह, या एक पेंसिल. इन चीजों को छूकर उनकी बनावट, तापमान और आकार का अनुभव करें. यह स्पर्श इंद्रिय का उपयोग करता है और आपके मन को वर्तमान क्षण में केंद्रित करता है.

3. **तीन चीजें सुनें (3 Things You Can Hear)**

   तीसरा कदम है तीन चीजों को सुनना. यह आपके आस-पास की ध्वनियाँ हो सकती हैं, जैसे कि पंखे की आवाज, पक्षियों की चहचहाहट, या आपके कंप्यूटर की बीप. ध्यान से इन ध्वनियों को सुनें और उनकी विशेषताओं पर ध्यान दें. यह सुनने की इंद्रिय का उपयोग करता है और आपको वर्तमान में वापस लाता है.

4. **दो चीजें सूंघें (2 Things You Can Smell)**

   चौथा कदम है दो चीजों को सूंघना. यह थोड़ा कठिन हो सकता है, लेकिन आप अपने आसपास की किसी भी सुगंध को पहचानने की कोशिश करें. यह आपकी कॉफी की सुगंध, एक फूल की महक, या किसी अन्य सुगंधित वस्तु की खुशबू हो सकती है. यह सूंघने की इंद्रिय का उपयोग करता है और आपके मन को शांत करने में मदद करता है.

5. **एक चीज का स्वाद लें (1 Thing You Can Taste)**

   पाँचवां और अंतिम कदम है एक चीज का स्वाद लेना. यह कुछ भी हो सकता है जो आप खा रहे हों या पी रहे हों, जैसे कि एक टुकड़ा चॉकलेट, एक मिंट, या आपके मुंह में पहले से मौजूद स्वाद. इस स्वाद को ध्यान से अनुभव करें और उसकी विशेषताओं पर ध्यान दें. यह स्वाद की इंद्रिय का उपयोग करता है और आपको वर्तमान क्षण में पूरी तरह से उपस्थित करता है.

अन्य (Other)

टहलने या दौड़ने जाएं. किसी प्रियजन को गुल्दस्ता, कार्ड भेजें या फोन करें. नज़ारे बदलने के लिए किसी दूसरे कमरे में बैठें. अपने हाथ, गर्दन, और पैरों को स्ट्रेच करें. 10 धीमी, गहरी साँसें लें. अपनी भावनाओं के बारे में लिखें या कुछ ऐसा लिखें जो आपके मन में हो.

ग्राउंडिंग तकनीकें सरल और प्रभावी होती हैं. आप इन्हें घर, ऑफिस, या कहीं भी अपना सकते हैं. **ग्राउंडिंग तकनीकें,** विशेष रूप से **5-4-3-2-1 विधि,** तनाव को प्रबंधित करने के लिए एक प्रभावी तरीका प्रदान करती हैं. यह तकनीक व्यक्ति को अपनी इंद्रियों के माध्यम से वर्तमान क्षण से जोड़ती है, जिससे तनाव कम होता है और मानसिक संतुलन प्राप्त करने में सहायता मिलती है. आज के चुनौतीपूर्ण वातावरण में, इस तकनीक को अपनी दिनचर्या में शामिल करना मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को सुधारने में सहायक हो सकता है. जीवन की जटिलताओं के बीच, यह सरल तकनीक आपकी मानसिक शांति को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जिससे आप अधिक केंद्रित, संतुलित और सशक्त महसूस कर सकते हैं.

आपको यह लेख कितना उपयोगी लगा, कृपया हमें अवश्य बतायें.

मोहम्मद शाहिद खान
वरिष्ठ प्रबन्धक (सू.प्रौ.)
सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग, बेलापुर

Work, Life, and the Art of Balance

Hello friends and dear readers!

Working in a bank has its ups and downs. Some days are hard, some are easy, but every day is a learning experience.

Over time, I have learned how to manage my job and personal life with the help of my family and colleagues.

It was not easy in the beginning but with patience and effort, I found a way to balance everything. And that makes life better and happier.

Challenges and Achievements

Every day the moment I step into the bank, I am actually prepared to face any contingency. We all know the world of banking is always buzzing with activity, and so are we.

Clients arrive with multiple problems ranging from applying for a loan to opening accounts and verifying past transactions. There are responsibilities that are to be executed within a given time frame, and so much more, yet with proper organization, I am able to get everything done.

Ensuring customer satisfaction is one of the formidable tasks we have. On difficult days, with lots of systems down, long lines, or deadlines approaching, I get very anxious.

But overcoming those small battles bring a lot of satisfaction. Assisting an individual with their financial queries and watching their smiles makes my role worthwhile.

Support System: My Strength

My workplace automatically changes my environment into that of 'home', where I feel comfortable, simply because of my colleagues. We work alongside one another, assist each other, and even help divide the chores when it becomes busy.

My bank makes sure that we do not feel tired all the time by ensuring a positive work-life balance.

They form the biggest group of my supporters. They always predispose me to new challenges, owing to the fact that my work is very stressful.

It feels great to be coming back to a home, which is quite an oasis for me because it allows me to unwind and recuperate so that I can perform optimally out there.

The Joy of a Productive Day

Nothing beats ending a long, busy day knowing that I tried my best. Every effort I have put in is justified when I see a content customer, a new interaction, a managed deal, or even just a simple smile and a 'Thank You' from someone.

To stay optimistic and enthusiastic, I take care of myself. This entails going to yoga classes, reading books, and spending time with my family and husband.

Life cannot be only about work, and I make it a point to partake in little things that make me happy as well.

My Goals and Dreams

I always believe in growing and improving myself. My goal is to keep learning and becoming better in my field. I want to grow in my career while staying true to my values—honesty, kindness, and hard work.

Apart from my job, I want to build strong relationships, spread positivity, and do something meaningful for society. Life will always have challenges, but I trust my ability to handle them with confidence.

For me, success is not just about promotions or salaries—it is also about inner peace and happiness.

Banking is my profession, but life is my priority. Balancing both is what makes the journey beautiful.

Gazala Azmi
Asst. Manager
B/O- Mithanpura, R/O- Muzaffarpur

सभी कार्य धैर्य से होते हैं, जल्दबाज मनुष्य सिर के बल गिरता है - शेख सादी

अंचल पूर्णियाँ 'परानपुर' गाँव की कथा: 'परती-परिकथा'

समाज, गाँवों में बिखरा हुआ है और प्रत्येक गाँव की अपनी खास पहचान है. 'परती-परिकथा'उसका प्रमाण है. इस उपन्यास में देहातों की वास्तविकता का चित्रण हुआ है. व्यक्ति की नहीं, व्यक्तियों के सामूहिक व्यक्तित्व के प्रतीक अंचल पूर्णियाँ'परानपुर' गाँव को नायकत्व मिला है, जिसके कारण यह उपन्यास एक कथासागर-सा बन गया है. 'परती-परिकथा'अपने शीर्षक से ही अपनी कथा-वस्तु का संकेत कर देता है. उपन्यासकार आरंभ से ही कहते हैं- ''धूसर, वीरान, अंतहीन प्रान्तर. पतिता भूमि, परती जमीन, वन्धा धरती' कथा होगी अवश्य इस परती की भी. व्यथा-भरी कथा वन्ध्या धरती की. इस पाँतर की छोटी-मोटी, दुबली-पतली नदियाँ आज भी चार महीने तक भरे गले से कल-कल सुर में सुना जाती है... सफेद बालूचरों में भरने वाली हंसा-चकेवा की जोड़ी रात्रि की निस्तब्धता को भंग कर किलक उठती है. कभी-कभी हिमालय से उतरी परी बोलती है- केंक्-केंक्-कें एँ..एँ गाँ आँ कें क फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने परती धरती का केंद्र 'पुरातन ग्राम 'परानपुर' को बनाया है. इस इलाके के लोग परानपुर को सारे अंचल का प्राण कहते हैं. यही परानपुर गाँव 'परती-परिकथा' का प्रमुख रंगमंच है. गाँव परानपुर को लेखक ने विशिष्टता प्रदान की है, उसे एक असाधारण गरिमा दी है. उपन्यासकार ने परानपुर गाँव को 'परती का प्रतीक होने के कारण काशी, प्रयाग, पाटिलपुत्र जैसे ऐतिहासिक स्थानों की परंपरा में लाकर खड़ा कर दिया है. 'इतिहास प्रसिद्ध स्थानों का प्रयोग कोई भी लेखक सरलता से कर सकता है किन्तु रेणु ने देश के छोटे से अंचल को लिया है और अपनी लेखनी से पूजा रचा ली है.' रेणु परानपुर अंचल के माध्यम से समसामायिक ग्रामीण जीवन का चित्र प्रस्तुत करना चाहते हैं. परानपुर ग्राम का परिचय रेणु जी ने इन शब्दों में दिया है- ''ग्राम परानपुर थाना रानीगंज..परानपुर की प्रतिष्ठा सारे जिले में है. सबसे उन्नत गाँव समझा जाता है. इस इलाके में सबसे उन्नत गाँव है परानपुर किंतु जिस तरह बाँस बढ़ते-बढ़ते अंत में झुक जाता है. उसी तरह गाँव भी झुका है.' भारतीय देहातों की जातियाँ अथवा टोलियों में बँटा सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक परंपराओं, रूढ़ियों, लोक-कथाओं, लोक-गीतों के स्वस्थ एवं विकृत प्रभाव, संस्कार एवं गाँव की धार्मिक श्रद्धाओं का स्वरूप उस पर पड़ने वाले आघातों का बनता-बिगड़ता रूप इस उपन्यास में स्पष्ट दिखाई देता है.

'परती-परिकथा' का अध्ययन करने पर हमारे समक्ष कोशी-अंचल का संपूर्ण प्राकृतिक और मानवीय दृश्य झलक उठता है. साथ ही उन दृश्यों के साथ कलाकार की आस्था और अंतरदृष्टि भी झाँकती है. 'परती-परिकथा'में सैकड़ों पात्र मानों एक विशाल जन समूह की तरह एकत्र हो गए हैं. रेणु जी ने सभी पात्रों का चरित्रांकन सबल रेखाओं से करना चाहा है. जहाँ तक कुछ पात्रों का चरित्र अधिक उभरकर आया है, किन्तु इस उपन्यास में ऐसे निरर्थक पात्र नहीं हैं जिन्हें केवल गणना के लिए रख दिया गया हो. ये सभी चरित्र परती जमीन के जीवन की विभिन्न दशाओं के प्रतीक हैं. परानपुर के महोत्सव में शामिल होनेवाले ये चरित्र अपनी व्यक्तिगत विशेषताओं से पूर्ण हैं. वे किसी वर्ग के प्रतिनिधि मात्र नहीं है. वे अपना एक जीवन जीते हैं. जितेन्द्र और ताजमनी शिवेन्द्र और गीता आदि प्रमुख पात्रों को कथा-धारा में अधिक स्थान मिला है, किन्तु साधारण से साधारण पात्र भी लेखक की सबल रेखाओं को छूकर अविस्मरणीय बन गया है. इस उपन्यास में जितेन्द्र का कुत्ता, मीरा और शिवेन्द्र का घोड़ा-मुंगा भी उपन्यास की मार्मिकता में सहायक है. 'परती-परिकथा' पात्र बहुल तथा घटना बहुल हो जाने के कारण स्थूल-समूह प्रतीत होता है परंतु भावों की गहराई में जाने पर तथा सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर यह रचना एकाग्रचित होकर लिखी गयी प्रतीत होती है. 'परती-परिकथा' के लेखक 'रेणु' एक सफल कथा-निर्माता के रूप में अवतरित होते हैं. वे कहानियाँ गढ़ना जानते हैं, सुनाना जानते हैं यह उनका अपना दुर्लभ गुण है.'

'परती-परिकथा' में परती भूमि की धुरी पर समस्याएँ घूमती रहती हैं, और रेणु जी ने इसीलिए भूमि को अपनी दृष्टि का अवलम्बन माना है. परानपुर गाँव में निवास करने वाली सभी जातियों की समस्याएँ, सभी वर्गों की समस्याएँ चाहे वह सामाजिक हो या आर्थिक, नैतिक हो या भौगोलिक, सभी को उपन्यास में कुशलता से उद्घाटित किया गया है. उपन्यासकार का कुशल अंकन हम तब देखते हैं जब सभी समस्याओं के केंद्र में परती 'धरती' को ही रखते हैं, क्योंकि सभी समस्याओं के चित्रण का माध्यम जमीन ही है. जितेन्द्र और उसके विरोधियों का संघर्ष

भी परती जमीन पर ही आधारित है. विशाल परती जमीन, बन्ध्या धरती की चौहद्दी पर परानपुर गाँव, पीड़ित भारतीय ग्रामीणों की भूमि, लालसा, नैतिक-अनैतिक सभी रूप धारण करती रहती है. जमींदारी उन्मूलन के पश्चात् भी भूमिहीनों की समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है. भूमि की समस्याएँ यहाँ के लोगों के हृदय में उथल-पुथल मचाती रहती हैं. यहाँ के ग्रामीणों का जीवन भले ही सामाजिक घटनाओं के मध्य दोलायित होता रहता है, परंतु भारतीय गाँव और ग्रामीण बेजान होकर अपनी एक लीक पर स्थिर दिखाई पड़ते हैं. ''नाम के लिए तो जमींदारी समाप्त हो गयी किंतु सभी पुराने जमींदार और राजा, बड़े-बड़े कृषक बन बैठे, जिनके पास दस-दस, पंद्रह-पंद्रह सौ बीघे जमीन थी. ऐसी अवस्था में पुराने सामन्तों और भूमिहीन कृषकों में संघर्ष होना स्वाभाविक उपन्यास में उपन्यासकार का ध्यान इस बात पर केंद्रित है कि 'भूमि' ग्रामीणों का जीवन है, नैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक सभी प्रकार की समस्याएँ इसी के द्वारा बनती-बिगड़ती रहती हैं. साथ ही रेणु जी ने ग्रामीण जीवन में वैज्ञानिक पद्धति के परिवर्तन की कल्पना की है. कोसी बांध के प्रसंग में पुरातन गाँव में वैज्ञानिक पद्धति की कल्पना दिखाई पड़ती है. कोसी की विनाशकारी लीला से ग्रामीणों को मुक्त कराने में भी जितेन्द्र को उनका हृदय परिवर्तन कराना पड़ता है. परती जमीन पर गुलाब की खेती एक अच्छी एवं सरस कल्पना है. परंतु इस कल्पना में ग्रामीणों की दमित लालसा की पूर्ति का प्रयत्न ही दिखाने का उद्देश्य उपन्यासकार का है. जितेन्द्र, लुत्तो, वीरभद्र आदि पात्र भले ही अलग-अलग दीख पड़ते हों, परंतु लेखक का संकेत एक ही समस्या की ओर है और वह समस्या है 'भूमि' की. रेणुजी ने इसे स्पष्ट करने की चेष्टा की है कि ''गाँवों में नैतिक मूल्यों में कमी आ गयी है. परिमाणत: गाँवों का सौंदर्य समाप्त हो गया है. गाँव टूट रहे हैं, परिवार टूट रहे हैं, भूमि पारस्परिक द्वेष के संघर्ष का कारण बन गई है. प्रत्येक व्यक्ति ईर्ष्या एवं स्पर्धा की भावना से प्रेरित है. एक-दूसरे का हक लूटने को तत्पर है. जिले-भर में किसानों और भूमिहीनों में हलचल मची हुई है. सिर्फ भूमिहीन ही नहीं, डेढ़ सौ बीघे के मालिकों ने दूसरे बड़े किसानों की जमीन पर दावे किए हैं.. हजारों बीघे वाला भी एक इंच जमीन छोड़ने को राजी नहीं.'' बाप-बेटे में हक के लिए संघर्ष है तो भाई-भाई हक के लिए संघर्ष करने पर तत्पर हैं. ''छ: महीने में ही गाँव का बच्चा-बच्चा पक्की गवाही देना सीख गया है...छ: महीने में गाँव बदल गया है, बाप-बेटे में भाई-भाई में अपने हक को लेकर ऐसी लड़ाई कभी नहीं हुई. पिछले डेढ़ साल से गाँव में न कोई पर्व ही धूम-धाम से मनाया गया है और न किसी त्योहार में बाजे बजे हैं..सोहर का गीत, कहीं-कहीं गाया गया है. लड़के-लड़कियों के ब्याह रूके हुए हैं..गीत के नाम पर किसी के पास एक शब्द भी नहीं रह गया है, मानो..मधुमक्खी के सूखे मधुचक्र-सी बन गयी है दुनिया'' इन पंक्तियों में लेखक ने भारतीय संवेदना को उभार कर रख दिया है. उपन्यास में इसी रूप में मानवीय संवेदना को अभिव्यक्ति मिली है. एक ओर उपन्यासकार नवीन वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा गाँव परानपुर का स्वरूप बदलना चाहता है तो दूसरी ओर मानवता के प्रति लेखक का व्यापक दृष्टिकोण है. जितेन्द्र भूमिपति के रूप में उपस्थित होकर परम्परित सामन्तवादी युग की याद दिलाता है, उसके जीवन को लेखक ने ढहते हुए सामन्तवादी युग की कथा के रूप में उपस्थित किया है. 'परती-परिकथा' मात्र परती जमीन की कथा न होकर ग्रामीणों के परती मन की कथा भी है. जमींदारी उन्मूलन तो हुआ परंतु जमीन की समस्या ज्यों का त्यों बनी हुई है साथ ही भूमिहीनों की समस्या भी ज्यों का त्यों बनी हुई है. ''मुंशी जलधारीलाल दास तहसीलदार और रामपखारन सिंह सिपाही. परानपुर स्टेट के इन दोनों कर्मचारियों ने मिलकर अपने स्वामी शिवेन्द्र मिश्र के सपुत्र जितेन्द्र के लिए कलम की नोंक और लाठी के जोर से जमींदारी की रक्षा की,..साबित कर दिया परानपुर पट्टी पत्ती है. जमीन खुदाकश्त, वाकश्त है रैयती हक है.'' इतना ही नहीं 'रेणु' जी ने लैंड सेटिलमेंट की चर्चा करते हुए एक ऐतिहासिक सत्य का उद्घाटन किया है- ''हिन्दुस्तान में सम्भवत: सबसे पहले पूर्णिया जिले पर ही लैंड सर्वे ऑपरेशन किया गया है. जिले में जमींदारों और राजाओं की जमींदारियों का विनाश हुआ किन्तु हिन्दुस्तान के सबसे बड़े किसान यही निवास करते हैं. जातिवाद संपूर्ण समाज में कोढ़ की तरह फैला है. मानव- हृदय को जातिवाद के दीमकों ने छलनी कर दिया है. छोटी जाति के लोगों का कातिल होना भी बड़ी जाति के लोगों को अखरता है.'' इस बात का फायदा खवास टोली के लुत्तो पूरी तरह से उठाता है. वह अपने पिता को दागने वाले मिश्र परिवार से बदला लेने के लिए छोटी जातियों को उकसाता है तथा जातिवाद के आधारपर प्रजातंत्र को जातितंत्र में बदल देना चाहता है. इसके लिए वह समाज के अंधविश्वासों से लाभ उठाता है. गहलोटा टोले के निरसू भगता पर चक्कर परती के परमादेव की सवारी लुत्तो की कूटनीति का ही एक अंग है इसीलिए निरमू सवार परमादेव कमेसरा से कहता है ''सोलकन्ट होकर तुम बाबू बबुआन के पच्छे में हो. तुम्हारा नाश होगा'' इसी प्रकार गहबर से जाने के पहले वह कहता है- ''परती तोड़ कर मेरी आसनी को जिसने बर्बाद किया है उससे बदला लो. ठाकुरवाड़ी में जो रामलला है. रामलला की पूजा करने वाले पुजारी की बात सुनो, कल्याण होगा'' रामलला के पुजारी पंडित सरवजीत चौबे चार हजार सोलकन्ह का नेता है. लुत्तो ने उसे ग्राम-पंचायत का सरपंच बनाने का लोभ दिखाया है. सरपंच पद के चक्कर में पड़ कर वह परती को तोड़ने वाले जितेंद्र पर अस्सी हजार गौ-हत्याओं का पाप लगाने के लिए रामलला के भक्तों से 'बा-आं-आं' का नारा लगवाता है.

सिमराहा की सपाट धरती पर हजारों पेड़ लग गए हैं. रेणु ने पूर्णिया की लाखों एकड़ बंध्या परती जमीन को हरे-भरे बागों और लहराते हुए खेतों में परिणत होने का स्वप्न देखा था. उन्होंने विश्वास किया था कि नेहरू सरकार द्वारा चलायी गई कोशी नदी घाटी योजना पूर्णिया अंचल को बाढ़ के प्रकोप से सदा के लिए मुक्त कर देगी और ऊसर-बंजर पड़ी लाखों एकड़ जमीन अन्न और फलों की खेती से लहलहा उठेगी.

लेखक इसी विजन को प्रस्तुत करने के लिए परानपुर स्टेट के जमींदार पुत्र जितेन्द्रनाथ मिश्र को शहर से गाँव में बुलाता है जहाँ उसकी प्रेमिका ताजमनी ही नहीं, सूखी बंजर धरती भी अपने उद्धार के लिए प्रतीक्षा कर रही है. इस धरती के 'नालायक' बेटे परानपुर के अपढ़ और अधपढ़ किसान, कुसंस्कार-ग्रस्त पिछड़ी मानसिकता के ग्रामीण मिश्र परिवार के प्रति द्वेष और प्रतिहिंसा से ग्रस्त युवा नेता जितेन्द्र गाँव लौटना पसन्द नहीं करता और हर कदम पर उसका विरोध करता है. इस संघर्ष में सारा गाँव एकजुट होकर जितेन्द्र के खिलाफ खड़ा है, पर अन्तत: विजय जितेन्द्र की ही होती है और उपन्यासकार की संपूर्ण सहानुभूति जमींदार-पुत्र जितेन्द्र के साथ है. कथाकार की दृष्टि में गाँव के निवासी अंधविश्वासों और कुसंस्कारों से ग्रस्त हैं, जमीन के आपसी झगड़ों में ही दिन-रात लगे रहते हैं और जमींदार परिवार के प्रति अनावश्यक प्रतिहिंसा भाव से ग्रस्त हैं. जितेन्द्र एक ऐसा जमींदार-पुत्र है जिसका हृदय-परिवर्तन हो चुका है, जो गाँव का कायाकल्प कर देने का संकल्प लेकर अपने गाँव वापस लौटा है. आते ही वह पहले तो सर्वे सेटलमेंट में अपने अधिकार की लड़ाई लड़ता है और नाजायज तरीके से अपनी जमींन पर कब्जा करने की नियत रखने वाले परानपुर के दुष्ट किसानों को निराश करता है, पर भूमिहीन किसानों के दावों को स्वीकार कर लेता है. किंतु अपने प्रति प्रतिहिंसा की कुंठा से ग्रस्त लुत्तो की चुनौती से वह नहीं डरता. लुत्तो जितेन्द्र के कुछ विरोधी रिश्तेदार और उनका राजनीतिक शत्रु कुबेर सिंह उसे गाँव से उखाड़ने की पूरी कोशिश करते हैं, पर उन्हें सफलता नहीं मिलती, कथाकार की पूरी सहानुभूति जो उनके साथ है, जितेन्द्र अपने अधिकार की हजारों बीघे बंजर जमीन को ट्रैक्टर से जोत डालता है और गुलाब की खेती करता है, नए ढंग से पेंड़ लगाता है.

यहाँ एक बात स्पष्ट है कि लुत्तो द्वारा जितेन्द्र के विरूद्ध चलाया गया किसान आंदोलन इसलिए असफल होता है कि उसके पीछे किसानों के हित का भाव न होकर व्यक्तिगत प्रतिरोध का भाव है. धीरे-धीरे जितेन्द्र के प्रति गाँव का सामूहिक विरोध भी समाप्त हो जाता है, क्योंकि उस विरोध में वर्ग चेतना न होकर केवल परिवार के प्रति पुरानी प्रति हिंसा है. उपन्यास के अंत में कोशी नदी घाटी योजना का एक कार्यक्रम परानपुर गाँव में लागू होता है जिसमें गाँव के किनारे बहनेवाली 'दुलारी-दाय' नदी को नहर में बदलकर हजारों एकड़ परती जमीन को खेती के योग्य बनाने का लक्ष्य है. लुत्तो के नेतृत्व में इस कार्यक्रम के विरूद्ध एक जबरदस्त किसान आंदोलन होता है जिसमें जितेन्द्र किसानों को इस योजना की उपयोगिता समझाने में सफल होता है और आंदोलन तितर-बितर हो जाता है.

'परती-परिकथा' में आचंलिक परिवेश को ऐसा पंख लगा है कि वहाँ के वातावरण का कोई भी पहलू अछूता नहीं रह गया है. चाहे वहाँ की सामाजिक गतिविधियाँ हो राजनीतिक गतिविधियाँ हो आर्थिक गतिविधियाँ हो या सांस्कृतिक गतिविधियाँ हो सबके सब एक दूसरे से गुंथे हैं. 'परती-परिकथा' महज उत्कृष्ठ आंचलिक उपन्यास नहीं है. वे भारतीय साहित्य में पहले उपन्यास हैं जिन्होंने अपने ढंग से झिझकते हुए भारतीय उपन्यास को एक नई दिशा दिखाई थी.' 'परती-परिकथा' के आंचलिक परिवेश और आंचलिक ढाँचागत स्थितियों को तोड़ कर नई स्थिति के साथ, जो प्रगतिशील है, से संबंध जोड़ने में रेणु जी अपनी लेखनी के माध्यम से सफल रहे. रेणु का महत्व उनकी आंचलिकता में नहीं, आंचलिकता के अतिक्रमण में निहित है. बिहार के एक छोटे भूखंड की हथेली पर उन्होंने समूचे उत्तरी भारत के किसान की नियति-रेखा को उजागर किया था. यह रेखा किसान की किस्मत और इतिहास के हस्तक्षेप के बीच गुंथी हुई थी.'परती-परिकथा' में मूल समस्याएँ भूमि की हैं और रेणु जी ने उन परिवेश को क्यों चुना और इतनी बारीकी से आने का क्या कारण रहा है कि उपन्यास पढ़ते समय एक-एक चीजें हू-ब-हू सामने आती हैं, सरल से सरल रूप में इसके पीछे वजह यह रही है कि भूमि संबंधों और उनके अंतर्विरोधों के बारे में रेणु की जानकारी किताबी न थी. यही नहीं, उन्होंने ग्रामीण संस्थाओं की निरंकुशता को प्रत्यक्ष देखा था. फलत: उनके गाँवों में अंतर्विरोधों के मार्मिक प्रकरण हैं. ये प्रकरण उन्होंने कल्पना से नहीं गढ़े. बचपन से ही इस निरकुंश व्यवस्था का उन्हें बोध था. जो अन्तत: एक सामाजिक संघर्ष के दर्शन में बदल गया. इस दर्शन को रेणु ने जीवन और गद्य विधा के रूप में प्रमाणित किया जा सकता है कि 'परती-परिकथा' उपन्यास अपने समूचे आंचलिक परिवेश के गुण-दोष, संस्कृति और भौगोलिक सीमाओं को अपने अंदर समेटे हुए है, जिसमें भूमि संबंध का ईमानदारीपूर्वक चित्रण है, वहाँ की मिट्टी की गंध तथा लोक-जीवन सरल रूप में उपस्थित है, साथ ही उनकी समस्याएँ भी और निदान भी. इसमें आस्था और विषमताओं से संघर्ष करता हुआ एक आशा और नव-निर्माण भी है. वही संघर्ष और नव-निर्माण उपन्यास को पूर्णता प्रदान करता है. रेणु जी ने जो 'मैला आंचल' की भूमिका में कहा ''उसमें फूल भी है, शूल भी. धूल भी है, गुलाब भी.कीचड़ भी है, चंदन भी.सुन्दरता भी है, कुरूपता भी.'' यह 'परती-परिकथा' पर भी लागू होता है.

रेणु जी ने 'परती-परिकथा' में अपनी अंतदृष्टि एवं मनौवैज्ञानिक सूझ-बूझ और पकड़ का परिचय देते हैं. इनकी दृष्टि गाँव के सामूहिक जीवन के चित्रांकन पर है. सामान्यत: रेणु ने भारतीय देहात की ओर विशेषत: परानपुर देहात की मानसिकता को व्यक्त किया है, जिसमें स्वतंत्रता के बाद की हलचल और वस्तुस्थिति को रेखांकित किया गया है.

उपन्यासकार ने जमींदारी व्यवस्था को केंद्र में रखकर देश भर के सामंतों और पूँजीपतियों का चेहरा साफ किया है. यही कारण है उपन्यास का फलक बड़ा हो गया है. जमींदारी व्यवस्था को लेकर रेणु की दृष्टि बहुत ही पैनी है. रेणु ने ''परती-परिकथा'' में यह दिखाने का प्रयास किया है कि जमींदारी या पूँजीपति वर्ग के लोग, आमजनों का सदियों से शोषण

करते आ रहे हैं. वे समय के साथ-साथ अपनी नीति भी बदलते रहे हैं. आमजनों के दिलों में बैठने के लिए सहानुभूति दिखाते रहे हैं. साथ में अपनी जमीन या धन को किसी तरह बरकरार रख, उसी के बल पर लोगों का शोषणा भी करते रहे हैं. यह उपन्यास, इसलिए भी प्रासंगिक है कि आजादी के पहले से लेकर आज तक यही स्थिति बनी हुई है. उदाहरण के लिए, शिवेन्द्र मिश्र ने जायदाद, जालसाजी, डकैती आदि सभी हथकंडे का सहारा लेकर खड़ा किया. पड़ोस की जमींदारिन विधवा मिसेज गीता मिश्र का मैनेजर बनकर, प्रेमी और पति हो गया. जमींदारी उन्मूलन होने के समय दाव-पेंच और लाठी के बल पर सारी जमीन शिवेन्द्र मिश्र के बेटे जितेन्द्र मिश्र के नाम कर दी जाती है. जितेन्द्र मिश्र उस जमींन को बचाने के लिए जनता के प्रति सहानुभूति दिखाकर उसके दिल में बैठ जमीन बचाने में सफल रहता है. इस तरह से उपन्यास में जमींदार का बेटा जमींदार बनकर जीता है और गरीब और अधिक गरीब होते जा रहे हैं. इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में जमीदारी-व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंकने का प्रयास है किन्तु उन्होंने इस ओर भी इशारा किया है कि जमींदारी व्यवस्था बरकारार है. उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इनमें सिर्फ समस्याओं का चित्रण-भर ही नहीं है बल्कि उन समस्याओं का समाधान खोजने का विलक्षण प्रयास भी दिखता है. वस्तुत: रेणु ने अपने उपन्यास 'परती-परिकथा' में जिन समस्याओं को उठाया है वे समस्याएँ आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं. रेणु चित्रित करते हैं कि तमाम संघर्षो के बावजूद हमारे समाज में जमींदार अपनी मजबूत स्थिति बनाए हुए हैं, साथ ही ये भी दिखाते हैं कि यदि हमारे समाज में जमींदारी प्रथा जीवित है तो संघर्ष भी समाप्त नहीं हुआ है. किसानों और मजदूरों की तरफ से भी संघर्ष जारी है.

अमृतेश परमार्थ
क्षेत्रीय प्रमुख
कटिहार, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

किताबें

पुराने शहर की
तंग गली के कोने पर
एक जर्जर मकान.

मकान के एक कोने में
अस्त-व्यस्त हाल में यह कमरा
मेरी आरामग़ाह है.

ये किताबें - मेरी संगिनियाँ
मेरी मित्र - मेरी सखियाँ.

कुछ शेल्फ़ पर सजीं
कुछ फ़र्श पर बिखरीं
कुछ दीवारों पर टंगी.

कुछ उल्टी - कुछ सीधी
कुछ नईं - कुछ पुरानी
कुछ ख़ामोश - कुछ बोलती सी.

हर किताब ख़ुद में
इक कहानी छिपाए
इक तमन्ना लिए जी रही है.

किसी को तलाश है पाठक की
कोई इसके पन्नों को छूए
शब्दों को सराहे.

पाठक - हर किताब की क़िस्मत नहीं.
किताबों से मोह लगा बैठे
हर किसी को फ़ुरसत नहीं.

ले आते हैं चंद किताबें
घर सजाने के लिए.

किताबें एहसास दिलाती हैं
बुद्धिजीवी होने का.

कुछ किताबें मिल जाती हैं
यूँ ही राह चलते - चलते.
कहानी का सारांश
मुखपृष्ठ पर लिए.

मुखपृष्ठ आकर्षक लगता है.

मगर पन्ना पलटा तो
वही पुरानी जानी-पहचानी सी
दीमक खाए पृष्ठों की गंध.
ऐसी किताबें राह में ही छूट जाती हैं.

कुछ किताबों का आवरण
सुंदर होता है,
आकर्षित करती हैं.

मगर, भाषा क्लिष्ट
ऐसी किताबें निराश करती हैं,
चाह कर भी घर तक नहीं पहुंचतीं.

कुछ किताबें सहज - सरल - मृदुभाषी होती हैं
आवरण अक्सर साधारण
किन्तु विषय वस्तु गंभीर
सृजनात्मक प्रेरणात्मक उत्साहजनक.

ऐसी किताबें बुक शेल्फ़ में सजाई जाती हैं.
दीगर किताबें घर आ जाती हैं
येन केन प्रकारेण
मगर बिखरी रहती हैं
यहाँ वहाँ - जहाँ तहाँ.

कुछ किताबें
आदत बन जाती हैं
सिरहाने रहती हैं
उनकी मौजूदगी सुकून देती है.

पढ़ना ज़रूरी नहीं - उनका होना ही काफ़ी है.
ऐसी किताबों का होना ही काफ़ी है.

महेश बजाज
सेवानिवृत्त महाप्रबंधक

न कोई किसी का मित्र है और न शत्रु. संसार में व्यवहार से ही लोग मित्र और शत्रु होते रहते हैं - नारायण पंडित

माँ

माँ ये बात तू भी जानती है, और मैं भी.
कि तेरे बिन मैं अधूरी, और मेरे बिन तूं.

ये भाग-दौड़ भाग की जिंदगी में
मैं अपने आप को ढूंढ रही
और तूं अपने आप को मुझ में.

तेरा साया है, जो मुझे बिखरने नहीं देता.
वरना बिखरने में कोई कसर भी छोड़ी नहीं मैंने.

तूने पग-पग पर मेरा साथ दिया,
वहां भी साथ दिया जहां कोई नहीं साथ मेरे.

माँ दु:ख तुझे भी हुआ, मेरे दूर जाने से
और दु:ख मुझे भी, लेकिन थोड़े थोड़े आंसू बहाकर
संभाल लिया हमने.

आयुशी अग्रवाल
सहायक प्रबंधक-सू.प्रौ.
सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग
केन्द्रीय कार्यालय

स्टेशन की रोटी

रोटी मेरे पास भी है घर की बनी हुई ।
रोटी उसके पास भी हैं घरों से मांगी हुई ।।
मैं स्टेशन पर आ के खा रहा हूं।
वो स्टेशन पर रह के खा रहा है ।।
भूख मुझे भी लगी हुई हैं।
भूख उसे भी लगी हुई हैं ।।
मुझे भूख कब लगेगी मुझे मालूम है।
भूख उसे कब लगेगी मालूम नहीं।।
मुझे रोटी कमाने के लिए जिंदा रहना है।
वो जिंदा रहे तो रोटी कमाए।।
मैं सोचता हूं रोटी के साथ और क्या।
वो सोचता है रोटी के बिना कुछ नहीं।।
घर दोनों को जाना है
एक रोटी के साथ।
एक रोटी के बिना।।

रवि किरण मिश्रा
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर

दिनांक 06 एवं 07 मार्च 2025 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की झलकियाँ.

बड़े बढ़ाई न करे, बड़े न बोले बोल.

दिनांक 06 एवं 07 मार्च 2025 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की झलकियाँ.

दिनांक 06 एवं 07 मार्च 2025 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा केरल की राजधानी त्रिवेन्द्रम में 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की झलकियाँ.

हीरा मुख से कब कहे, लाख टका मेरा बोल.

अधूरे सपने

बेटी ने दसवीं की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कर ली थी, गौरव और मेघा, बेटी का दाखिला किसी अच्छे स्कूल में कराने को लेकर चर्चा कर रहे थे की तभी किसी की सिसकी ने उन का ध्यान भंग किया. देखा तो घर में काम करने वाली रीना रो रही थी ... मेघा ने घबराते हुए पूछा की क्या हुआ रीना रो क्यों रही है ? कुछ नहीं भाभी, घर की गरीबी और चार भाई बहनों की जिम्मेदारी सर पर होने से पिताजी ने दसवीं के बाद मेरी पढाई छुड़वा दी थी बस वही याद आ गया. मेघा ने पूछा तू आगे पढ़ना चाहती है क्या ? इस अप्रत्याशित प्रश्न को सुनकर रीना ने हाँ में सर हिलाया और फिर सुबकने लगी. मेघा ने उससे दसवीं की मार्कशीट और अन्य जरूरी कागजात अगले दिन लेकर आने को कहा, मेघा की आँखें चौड़ी हो गयी जब उसने देखा की रीना ने दसवीं की परीक्षा पिच्यासी प्रतिशत अंकों और तीन विषयों में विशेष योग्यता से पास की थी. मेघा ने तुरंत अपनी स्कूटी निकाली और रीना को लेकर निकल पड़ी. थोड़ी देर बाद दोनों एक स्कूल से मुस्कुराते हुए निकल रहे थे ... मेघा मुस्कुरा रही थी क्यूंकि उसने एक मरते हुए सपने को जिन्दा करने की कोशिश की थी और रीना मुस्कुरा रही थी क्यूंकि उसके अधूरे सपने को एक नया जीवन जो मिला था ...

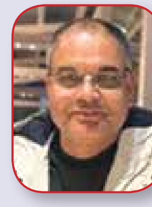

घनश्याम काबरा
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, रतलाम

पदोन्नति

सेन्ट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

श्री डी के अर्जवानी,
महाप्रबंधक

श्री धर्मेन्द्र कुमार पांडे,
उप महाप्रबंधक

श्री विभूति वी झा,
उप महाप्रबंधक

श्री शैलेन्द्र सिन्हा,
उप महाप्रबंधक

श्री शैलेष वर्मा,
उप महाप्रबंधक

श्री अश्विनी मोरोलिया,
उप महाप्रबंधक

श्री राजीव गुप्ता,
उप महाप्रबंधक

राजभाषा की आवश्यकता एवं राजभाषा से अपेक्षा

किसी भी देश और समाज की प्रगति के लिए उसकी भाषा का विशिष्ट महत्व होता है. भाषा ही मानवीय जीवन का वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपने भावों व विचारों को अभिव्यक्त करता है. अपने घर-परिवार और पास-पड़ोस से लेकर गाँव-शहर, राज्य-राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक संप्रेषण और व्यवहार करने का माध्यम भाषा ही है. हम अपने घर में अपने परिवार के लोगों के साथ किस भाषा में बात करें, इस पर कोई वैधानिक निर्देश या प्रतिबंध नहीं है. घर में बातचीत सहज और अनौपचारिक रूप से की जाती है, जो किसी साहित्यिक या वैधानिक अनुशासन से मुक्त होती है. परिवार से बाहर भी अपने मित्रों से मिलते हुए या बाजार में सामान खरीदते हुए किस भाषा में बात की जाए यह परस्पर सुविधा और समझ पर निर्भर है. एक भाषा-भाषी समाज में भाषा का चयन कोई समस्या नहीं है, जबकि बहुभाषी समाज में परस्पर संपर्क के लिए एक संपर्क भाषा की आवश्यकता पड़ती है. इस संपर्क भाषा के स्वरूप को लेकर भी कोई साहित्यिक या वैधानिक प्रतिबंध नहीं होता. पर, जहाँ तक राज-काज या सरकारी काम-काज का प्रश्न है, तो उसकी कुछ निर्धारित व औपचारिक आवश्यकताएँ होती हैं. राजभाषा इसी आवश्यकता को पूर्ण करती है.

बहुभाषी देशों में सरकारी काम-काज के लिए एक विशिष्ट भाषा का चयन करना कठिन हो जाता है. परंतु, राज-काज की प्रकृति ही कुछ ऐसी है कि उसमें बहुत सारी भाषाओं का प्रयोग नहीं किया जा सकता. उदाहरणार्थ, यदि किसी सरकारी विभाग में किसी फाइल में एक अधिकारी एक भाषा में टिप्पणी लिखे, दूसरा अधिकारी दूसरी भाषा में, और तीसरा अधिकारी किसी अन्य तीसरी भाषा में, तो कार्य निष्पादन कठिन और अव्यावहारिक हो जाएगा. यदि एक ही मामले में, और कोई मराठी में लिखे तो उसे किस प्रकार समझा जाएगा? उनका अनुवाद कराने में लगने वाले समय और उन टिप्पणियों पर आधारित निर्णय में होने वाली देरी की कल्पना सहज ही की जा सकती है. यदि एक औपचारिक और उचित प्रक्रिया के द्वारा यह निश्चय कर दिया जाए कि सरकारी काम-काज अमुक भाषा में किया जाए, तब विभिन्न मामलों में कार्यवाही शीघ्र और सुगमतापूर्वक हो सकती है. इस दृष्टि से राजभाषा की औपचारिक घोषणा करना आवश्यक हो जाता है.

देश की राजभाषा से देश के निवासियों की कुछ अपेक्षाएँ भी होती हैं. एक आम नागरिक को दिन-प्रतिदिन की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक सरकारी कार्यालयों जैसे- राशन की दुकान, तहसील, बैंक, डाकघर, पुलिस थाना, कचहरी, पंचायत, नगरपालिका, राजस्व कार्यालय आदि से संपर्क और व्यवहार करना पड़ता है. साथ ही प्रत्येक नागरिक से सुशिक्षित और सुसंस्कृत होने की अपेक्षा भी नहीं की जा सकती. ऐसे में आम जनता सरकार से यह अपेक्षा करती है कि उसे उसकी भाषा में सरकारी सेवाएँ-सुविधाएँ उपलब्ध हो सकें. यह भाषा बहुसंख्यक जनता के लिए सहज, सरल, बोधगम्य और संप्रेषणीय होनी चाहिए. यदि राज-काज की भाषा आम जनता की समझ से परे होगी तो यह स्थिति जनता के लिए समस्या का कारण बन जाएगी. यदि जनता को उसकी भाषा में शिक्षा, न्याय, स्वास्थ्य सेवाएँ और सरकारी सुविधाएँ ही नहीं मिल पातीं, तो यह स्थिति देश के लोकतांत्रिक स्वरूप पर भी एक प्रश्नचिह्न खड़ा करती है.

भारत जैसे बहुभाषी देश में जब राजभाषा का निश्चय करने के लिए संविधान सभा में विचार हुआ, तो देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया. इसका कारण यह था कि हिंदी भारत में शताब्दियों से एक संपर्क भाषा के रूप में व्यवहृत होती रही है. स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान तो हिंदी सर्वमान्य रूप से राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई. परंतु भारत संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के साथ-साथ पंद्रह वर्षों के लिए विदेशी भाषा अंग्रेजी को भी राजभाषा के रूप में मान्यता दे दी गई. इस ऐतिहासिक भूल का परिणाम यह हुआ कि आज अंग्रेजी प्रमुख कार्यकारी राजभाषा बन बैठी है और हिंदी का स्थान राजभाषा के रूप में गौण होकर प्राय: अनुवाद तक सीमित हो गया है.

इसमें कोई संदेह नहीं है कि देश की बहुसंख्यक जनता की अपनी राजभाषा अपेक्षाओं को भारत की सर्वाधिक बोली, लिखी,

समझी और प्रकाशित होने के जनतंत्र की राजभाषा से तीन प्रकार की अपेक्षाएँ व्यक्त की हैं- ''एक तो यह कि वह भारतीय जनता के मनोभावों के अनुकूल हो. उसमें शासक-शासित का भाव न हो. एक आपसी बराबरी का भाव हो. उससे ख्वामख्वाह सरकार और नागरिक है कि वह पहले भाषा हो, तब राजभाषा. भाषा होने के लिए यह जरूरी है कि वह अनुवाद की भाषा हो, वह विचार की भाषा हो. अनुवाद का दबाव हम चाहें कितनी कोशिशि करें, बना रहेगा, जब तक कि अंग्रेजी का विकल्प रहेगा. भारत की दूसरी भाषाओं में अनुवाद कोई समस्या नहीं है, क्योंकि भाषाओं में मुहावरों का गठन एक-सा है. इन सभी भाषाओं में बहुत बड़ा हिंस्सा साझेदारी की शब्दावली का है और सभी क्षेत्रों में विचार और अभिव्यक्ति का ढंग एक-सा है. इस एकता की पहचान के लिए विशेष अनुसंधान योजनाएँ चलाई जानी चाहिए. तीसरी अपेक्षा यह है कि उच्चतर अध्ययन के क्षेत्र में हम अनुवाद की दासता से मुक्ति पाएँ".

कोई भी भाषा जितने व्यापक क्षेत्र में और जितने विविधीकृत आयामों में प्रयोग की जाती है, उसका दायरा उतना ही अधिक विस्तृत और विविधीकृत होता चला जाता है. कोई भी भाषा जितने विषयों व क्षेत्रों में प्रयुक्त होती हैं उसके उतने ही अलग-अलग विशिष्ट रूप विकसित होते जाते हैं. हालांकि विश्व की हर भाषा का स्वरूप इतना बहुक्षेत्रीय और बहुआयामी नहीं होता. किसी भाषा के स्वरूप का निर्माण उसकी ऐतिहासिक परिस्थितियों और उसके भौगोलिक क्षेत्र-विस्तार, उसमें शिक्षा-शोध की स्थिति, उसकी आर्थिक परिधि व प्रभाव, उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक अंतर्क्रिया पर निर्भर करता है. उदाहरणार्थ, अंग्रेजी भाषा के विविध रूपों के विकास के श्रेय का बड़ा भाग अंग्रेजों के एक दौर में विश्व भर में विद्यमान शासन व उनकी उपनिवेशवादी साम्राज्यवादी प्रवृत्ति को दिया जा सकता है. अंग्रेजी का वैश्विक शब्द-भंडार उसकी ग्लोब पर वैश्विक उपस्थिति का ही प्रभाव है. यूरोप में हुआ पुनर्जागरण और अंग्रेजी के ज्ञान-विज्ञान-शोध की भाषा बनने में भी सहज संभव है.

यदि हिंदी के संदर्भ में बात करें तो यह भी आरंभिक दौर में सभी भाषाओं की तरह ही बोल-चाल की हिंदी थी. किंतु, ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिस्थितियों का ही परिणाम था कि भक्ति-आंदोलन और भारतीय नवजागरण के काल में हिंदी की बोलियां क्रमशः ब्रज-अवधी और फिर खड़ी बोली साहित्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई. 19वीं शताब्दी में छापेखाने की शुरुआत के साथ-साथ हिंदी पत्रकारिता की भाषा भी बनने लगी थी. स्वतंत्रता संघर्ष में गाँधी जी व कांग्रेस के प्रयासों तथा हिंदी की सार्वदेशिकता के परिणामस्वरूप इसे राष्ट्रभाषा मान लिया गया. स्वतंत्रता से पहले भी हालाँकि अनेक देशी रियासतों, मराठों, मुगलों आदि के शासन में हिंदी राज-काज की भाषा थी, पर स्वतंत्रता के बाद हिंदी का राजभाषा के रूप में अभूतपूर्व विकास हुआ. 1991 में आए उदारीकरण और तदंतर भूमंडलीकरण, निजीकरण, बाजारीकरण और उपभोक्तावाद के दौर में हिंदी 'बाजार की हिंदी', विज्ञापन की हिंदी', 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की हिंदी' जैसे रूपों तक विकसित हो रही है.

आज हिंदी भाषा मुख्य रूप से बोलचाल, साहित्य, सिनेमा, पत्रकारिता, शिक्षा, वाणिज्य-व्यापार, खेल-कूद, विज्ञान-तकनीक और प्रशासन के क्षेत्रों में प्रयुक्त हो रही है. धीरे-धीरे इसके कई रूप विकसित होते जा रहे हैं, जिन्हें 'भाषा की प्रयुक्तियाँ' कहा जाता है. ''प्रयोग क्षेत्र के अनुसार भाषा के अलग-अलग रूप विकसित होते चले जाते हैं, जिन्हें भाषाविज्ञान की शब्दावली में 'प्रयुक्ति'(रजिस्टर) कहते हैं.' इस प्रकार राजभाषा हिंदी, प्रशासनिक हिंदी या कार्यालयी हिंदी भी वस्तुत: हिंदी की एक प्रयुक्ति है, जो केंद्र या राज्य सरकारों के शासकीय काम-काज में प्रयुक्त हो रही है.

राजभाषा हिंदी के स्वरूप को लेकर प्राय: आमजन व संचार माध्यमों में एक भ्रम व आशंका जैसी स्थिति रहती है. कुछ लोग मानते हैं कि राजभाषा हिंदी आमजन की समझ से कोसों दूर और दुर्बोध है, जबकि अन्य लोगों का मत है कि चूँकि प्रशासनिक क्रियाकलापों में अभिव्यक्ति पारिभाषिक शब्दों के माध्यम से की जाती है, अत: हिंदी के शब्द संविधान की अपेक्षा के अनुरूप मूलत: संस्कृत व गौणत: भारतीय भाषाओं से निर्मित किये गए हैं. उनसे अधिक सरलता व सपाटपन की आशा नहीं करनी चाहिए.

जगदीश परिहार
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़

हिंदी : लोकल से ग्लोबल

हिंदी भाषा केवल भारत की पहचान नहीं, बल्कि वैश्विक मंच पर तेजी से उभरती एक सशक्त भाषा है. यह भाषा भारतीय संस्कृति, परंपरा और मूल्यों का प्रतीक है. आज हिंदी ने लोकल स्तर से ग्लोबल स्तर तक अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है. इसके महत्व को न केवल भारत ने, बल्कि विदेशों देशों ने भी स्वीकार किया है.

हिंदी का लोकल महत्व:

भारत में हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में लगभग 43.6% लोग हिंदी को अपनी मातृभाषा मानते हैं, जबकि 55% से अधिक लोग हिंदी को बोल और समझ सकते हैं. हिंदी साहित्य, सिनेमा और संगीत ने इसे जन-जन तक पहुंचाया है. प्रेमचंद, महादेवी वर्मा और रामधारी सिंह दिनकर जैसे साहित्यकारों ने हिंदी को सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया. इतना ही नहीं बल्कि हिंदी ने विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के बीच एकता स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

हिंदी का वैश्विक महत्व और ऐतिहासिक निर्णय:

आज हिंदी भारत की सीमाओं को पार कर विश्वभर में अपनी जगह बना रही है. इसे लगभग 70 करोड़ लोग बोलते हैं और यह दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है. हिंदी के वैश्विक प्रसार को प्रोत्साहन देने के लिए कई देशों ने इसे सीखने और अपनाने के लिए ऐतिहासिक और अद्वितीय निर्णय लिए हैं.

मॉरीशस:

मॉरीशस में हिंदी को स्कूल और विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है. वहां के राष्ट्रीय उत्सवों में हिंदी का विशेष स्थान है. 1976 में, मॉरीशस सरकार ने हिंदी को आधिकारिक भाषाओं में शामिल किया.

फिज़ी:

फिज़ी में हिंदी को 'फिज़ी हिंदी' के रूप में पढ़ाया और बोला जाता है. यह भाषा उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है. फिजी के संविधान में हिंदी को एक प्रमुख भाषा का दर्जा दिया गया है.

चीन:

चीन ने 2003 में हिंदी भाषा को अपनी 'पेकिंग यूनिवर्सिटी' में पढ़ाने की शुरुआत की. यह कदम भारत और चीन के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल थी.

अमेरिका और यूरोप:

अमेरिका और यूरोप के कई विश्वविद्यालयों ने हिंदी को अपनी भाषा पाठ्यक्रमों में शामिल किया है. 2020 में, अमेरिका के 20 से अधिक विश्वविद्यालयों ने हिंदी को दूसरी भाषा के रूप में पेश किया.

संयुक्त राष्ट्र और अन्य मंच:

संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी भाषणों ने इसे वैश्विक स्तर पर और मजबूती दी है. भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने हिंदी में भाषण देकर इसे अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई.

हिंदी को अपनाने की बढ़ती प्रवृत्ति:

आज दुनिया में हिंदी सीखने की मांग बढ़ रही है. यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, हर साल लगभग 5 लाख विदेशी छात्र हिंदी सीखने के लिए आवेदन करते हैं. जापान और दक्षिण कोरिया में हिंदी सीखने वालों की संख्या में 40% की वृद्धि हुई है. यह भाषा न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए बल्कि व्यापारिक संबंधों को भी मजबूत करने का माध्यम बन रही है.

डिजिटल मीडिया ने भी हिंदी को आगे बढ़ाया है. यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्मों पर हिंदी में सामग्री तेजी से बढ़ रही है. गूगल ने पाया है कि भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं का लगभग 60% भाग हिंदी सामग्री को प्राथमिकता देता है. इसके साथ ही गूगल, फेसबुक और अमेज़न जैसी कंपनियां भी हिंदी को प्रोत्साहित करते हुए इसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रमुख स्थान दे रही हैं.

भविष्य की संभावनाएं:

हिंदी का वैश्विक महत्व बढ़ता जा रहा है. भारत की आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति से साथ हिंदी की स्वीकार्यता भी बढ़ रही है. इसे और मजबूत करने के लिए शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी को और प्रोत्साहित करना आवश्यक है.

निष्कर्ष:

हिंदी का लोकल से ग्लोबल तक का सफर भारत की सांस्कृतिक धरोहर को विश्व स्तर पर पहुंचने का प्रतीक है. यह भाषा न केवल हमारे देश का गौरव है, बल्कि विश्व समुदाय के साथ हमारे संबंधों को मजबूत करने का माध्यम भी है. विदेशों द्वारा हिंदी को अपनाने और उसे बढ़ावा देने के ऐतिहासिक निर्णय इस बात का प्रमाण हैं कि हिंदी एक वैश्विक भाषा बन चुकी है. भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक मंचों पर हिंदी का प्रचार-प्रसार किया है. उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा, जी20 शिखर सम्मेलन और अन्य अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में भाषण देकर हिंदी को एक नई पहचान दी. अब यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम हिंदी को और आगे बढ़ाएं और इसे विश्व मंच पर सर्वोच्च स्थान दिलाएं.

प्रिया कपूर
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

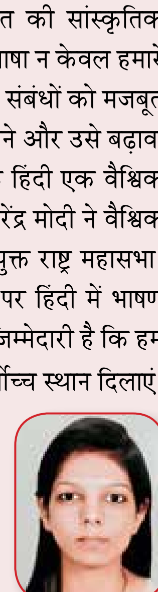

सरलतापूर्वक कहे गए वचन को अन्यथा नहीं लेना चाहिए - अश्वघोष

नारी शक्ति-समाज और राष्ट्र निर्माण में योगदान

भारत सांस्कृतिक मूल्यों एवं परम्परा से समृद्ध देश है जहां नारी को सृष्टि का आधार माना गया है. मनुस्मृति में कहा गया है ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:, यत्रैतास्तु न पूज्यंते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।। अर्थात जिस स्थान पर स्त्रियों की पूजा की जाती है और उनका सत्कार किया जाता है, उस स्थान पर देवता सदा निवास करते हैं और प्रसन्न रहते हैं तथा जहां ऐसा नहीं होता है वहां सभी धर्म और कर्म निष्फल होते हैं. नारी ही सृष्टि का आधार है, समाज की नींव तथा राष्ट्र की शक्ति है. नारी, सृष्टि की वह आदि शक्ति है, जो जीवन के हर पहलू को स्पर्श करती है. नारी न केवल एक मां, बहन, पत्नी या बेटी के रूप में अपने परिवार का पालन पोषण करती है बल्कि समाज व राष्ट्र निर्माण में भी अपनी सक्रिय भागीदारी रखती है. वह जननी है, जो जीवन को जन्म देती है, शिक्षिका है, जो ज्ञान का प्रसार करती है, और समाज की शिल्पकार है, जो मूल्यों और संस्कारों का निर्माण करती है. नारी शक्ति केवल महिलाओं के शारीरिक सामर्थ्य को ही नहीं बल्कि उनके अदम्य साहस, धैर्य और ज्ञान को भी दर्शाती है. सदियों से महिलाओं ने अपनी बहुआयामी भूमिकाओं से समाज व राष्ट्र निर्माण में अद्वितीय योगदान दिया है. आज जब हम एक समावेशी और प्रगतिशील भविष्य की ओर अग्रसर हैं, नारी शक्ति का महत्व तब और भी बढ़ जाता है. नारी शक्ति को सशक्त बनाना, एक न्यायपूर्ण और समृद्ध समाज की नींव रखना है.

ऐसा कहा जाता है कि यदि किसी भी संस्कृति को समझना है तो उस संस्कृति में नारी को दशा कौ समझना चाहिये. नारी का सम्मान एवं उसके हितों की रक्षा हमारे देश की सदियों पुरानी संस्कृति रही है क्योंकि नारी की सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत समाज की द्योतक है. किसी भी देश विकास संबंधी सूचकांक को निर्धारित करने के लिये व्यापार, उद्योग, शिक्षा इत्यादि के स्तर के साथ ही देश में महिलाओं की कैसी स्थिति है इसका अध्ययन भी किया जाता है.

प्राचीन भारत में नारी को पुरुष के समान ही अधिकार दिये गये थे जिसके कारण महिलायें समाज के सभी प्रमुख क्षेत्रों जैसे राजनीति, शिक्षा इत्यादि में बढ़-चढ़ कर भाग लिया करती थीं किंतु दुर्भाग्यवश विदेशी शासनकाल के दौरान महिलाओं का बहुत उत्पीडन हुआ जिस कारण महिला सशक्तिकरण की गति वर्षों तक धीमी रही. समय बीतने के साथ महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति सजग होती गयीं जिससे आधुनिक युग की नारी शिक्षा, सूचना प्रौद्यौगिकी, राजनीति, खेल, पत्रकारिता, कला, बिजनेस इत्यादि जैसे समाज के सभी प्रमुख क्षेत्रों में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर कर अपना अमूल्य योगदान दे रही है. भारत का समाज एक पुरुष प्रधान समाज रहा है जहां महिलाओं को शक्ति का स्वरूप कहने के साथ ही अबला की उपाधि भी दी गयी है किंतु यह महिलाओं की जिजीविषा एवं दृढ़ता का भी द्योतक है कि महिलायें उपयुक्त क्षेत्रों के अलावा कठिन माने जाने वाले क्षेत्रों जैसे सेना इत्यादि में भी अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं. हाल ही में महिलाओं को वायुसेना में फाइटर प्लेन उड़ाने की भी अनुमति प्राप्त हो गयी है. कल्पना चावला, टेसी थॉमस, सुनीता विलियम्स जैसी महिलाओं ने अपने अपने क्षेत्र में आगे बढ़कर नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं जो कि युवाओं हेतु प्रेरणास्त्रोत का कार्य करते हैं.

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नारी शक्ति का योगदान

सामाजिक व पारिवारिक संरचना- समाज के ताने बाने को बुनने में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है. समाज एवं राष्ट्र निर्माण में महिलाओं के योगदान की शुरुआत उनके खुद के परिवार से ही हो जाती है. प्रजनन की क्षमता प्रकृति ने सिर्फ महिलाओं को ही दी है तथा एक शिशु की पहली शिक्षिका उसकी माता ही होती है. एक माँ के रूप में, वह अपने बच्चों को स्नेह, सहानुभूति, और नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाती है, जो उन्हें सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं. सर्वविदित है कि महिलाओं में मातृत्व, दया, त्याग इत्यादि गुण नैसर्गिक रूप से उपस्थित हैं. महिलायें अपने परिवार की सभी जिम्मेदारियों को निभाते हुये अपने कुशल प्रबंधन से परिवार को सुखी रखती हैं, एक स्वस्थ पारिवारिक माहौल बनाती है. यह पारिवारिक स्थिरता, सामाजिक सामंजस्य का आधार बनती है. यदि परिवार की नारी शिक्षित हो तो निश्चित ही परिवार भी सुसंस्कृत होता है. नारी के प्रयासों के कारण ही संस्कृति, परम्परायें एवं संस्कार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होते हैं.

शिक्षा और ज्ञान-वर्तमान समय में महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही हैं. नारी ज्ञान की वाहक है. वह न केवल अपने बच्चों को शिक्षित करती है बल्कि समाज में शिक्षा के प्रसार में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है. नारी, कम उम्र में ही बच्चों को शिक्षा का महत्व समझाती है, जिससे समाज में शिक्षा का स्तर बढ़ता है. महिलाएँ, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से भी ज्ञान का प्रसार करती हैं. महिला लेखिकाओं तथा विचारकों ने सामाजिक चेतना को जागृत करने का कार्य किया है. उदाहरण हेतु महिलायें शिक्षा के क्षेत्र में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं क्योंकि शिक्षा ही महिलाओं को सशक्त बनाती है. वह स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त कर डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ इत्यादि बनकर राष्ट्र की उन्नति में अपना

योगदान दे रही हैं. इसके अतिरिक्त वह शिक्षिका की भूमिका निभाकर करोड़ों बच्चों/युवाओं को शिक्षित कर देश के उज्ज्वल भविष्य की नींव रख रही हैं. उदाहरण हेतु श्रीमती सावित्रीबाई फुले महिला शिक्षा की प्रबल समर्थक थीं तथा हमारे देश की पहली महिला स्कूल शिक्षक भी थीं. डॉ. कादम्बिनी गांगुली भारत की पहली महिला डॉक्टर थीं. सुश्री महादेवी वर्मा प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाध्यापिका तथा वाइस चांसलर थीं.

कला एवं संस्कृति- सर्वविदित है कि नारी कला एवं संस्कृति की संरक्षिका है. महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं. वह संगीत, नृत्य, साहित्य और शिल्प के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को अभिव्यक्त करती है जिससे समाज की सांस्कृतिक धरोहर समृद्ध होती है. लोक कलाओं को जीवित रखने में महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है. वे पीढ़ियों से चली आ रही कलाओं को संरक्षित करती हैं और उन्हें अगली पीढ़ी तक पहुँचाती हैं.

सामाजिक सुधार- नारी ने सदैव सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठाई है. दहेज प्रथा, बाल विवाह तथा घरेलू हिंसा जैसे मुद्दों ने महिलाओं पर ही सर्वाधिक नकारात्मक प्रभाव डाला है. महिलाओं ने इन मुद्दों पर अपनी आवाज उठाकर समाज को बदलने में अपनी महती भूमिका निभाई है. महिलाओं ने अनेक आंदोलनों में भाग लेकर समाज को जागरूक किया है. वे सामाजिक न्याय के लिए लड़ती हैं और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की आवाज बनती हैं.

स्वास्थ्य और कल्याण- नारी, परिवार और समाज के स्वास्थ्य और कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. वह न केवल अपने परिवार के सदस्यों की देखभाल करती है, बल्कि सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में भी सक्रिय रूप से भाग लेती है. महिलाओं ने मातृत्व स्वास्थ्य, शिशु देखभाल और पोषण जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नारी शक्ति का योगदान

राष्ट्र निर्माण में नारी का योगदान बहुआयामी है.

राजनीतिक भागीदारी- भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त भारत के मौलिक अधिकारों के अंतर्गत सभी को अनुच्छेद 14-18 के अंतर्गत समानता का अधिकार दिया गया है जो कि महिलाओं और पुरुषों को बराबरी का अधिकार देता है. भारतीय राजनीति की ऐतिहासिक महिलाओं जैसे रानी लक्ष्मीबाई, रानी चेनम्मा, रजिया सुल्तान इत्यादि ने अपना लोहा मनवाया ही साथ ही आजादी मिलने के बाद भी महिलाओं ने अपने नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन कर राजनीति के क्षेत्र में अपना परचम लहराया है. नारी, राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाकर राष्ट्र के विकास में योगदान देती है. महिला नेताओं ने विभिन्न जन कल्याणकारी नीतियों का निर्माण किया है और शासन में पारदर्शिता लाई है. पंचायती राज से लेकर संसद तक, महिलाएं अपने नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं. वे स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. श्रीमती इंदिरा गांधी भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री रहीं जिन्होंने अपने कुशल प्रबंधन एवं नीति निर्माण क्षमताओं से देश का नेतृत्व किया. भारत की पहली महिला राज्यपाल भारत कोकिला सरोजिनी नायडू जी की स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका रही. संविधान निर्माण के दौरान वह महिला अधिकारों की पैरोकार रहीं. इसी प्रकार श्रीमती सुचेता कृपलानी जी देश की पहली महिला मुख्यमंत्री रहीं जो अँग्रेजों के शासनकाल में कई बार जेल भी गयीं. श्रीमती सुषमा स्वराज जी भारत की महिला विदेश मंत्री थीं जो सोशल मीडिया के माध्यम से आम जनता की समस्यायें खुद सुनती थीं. वर्तमान राजनीति में भी सुश्री निर्मला सीतारमण, श्रीमती स्मृति ईरानी, ममता बनर्जी इत्यादि महिलाओं की सशक्त भूमिका है.

आर्थिक योगदान और उद्यमिता- बचत, उपभोग-अभिवृत्ति और पुनर्चक्रण-प्रवृत्ति के मामले में भारत की अर्थव्यवस्था महिला केंद्रित मानी गई है. नारी, अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. वह विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत है, उद्यमिता को बढ़ावा देती है, और आर्थिक विकास में योगदान करती है. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हे आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है. विशेषकर कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है.स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं. वे छोटे व्यवसाय

वही सत्य कहना चाहिए जो दूसरों की प्रसन्नता का कारण हो. जो सत्य दूसरों के दुख के लिए हो उसके संबंध में बुद्धिमान मौन ही रहें - विष्णु पुराण

शुरू करती हैं और अपनी आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करती हैं. हाल के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का **प्रबंधन करते हुए भी देखा है -** अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ और नामचीन महिलाएं हैं, जिन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है.

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति- नारी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रही है. महिला वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, और अन्वेषकों ने नवाचार को बढ़ावा दिया है और राष्ट्र को तकनीकी रूप से सशक्त बनाया है. अंतरिक्ष अनुसंधान से लेकर चिकित्सा विज्ञान तक, महिलाएं अपना योगदान दे रही हैं. वे अनुसंधान और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. कोविड-19 के दौरान कोरोना योद्धाओं के रूप में महिला डाक्टरों, नर्सों, आशा वर्करों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व समाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की परवाह न करते हुए मरीजों को सेवाएं दी है. कोरोना के खिलाफ टीकाकरण अभियान को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई. भारत बायोटेक की संयुक्त एमडी सुचित्रा एला को स्वदेशी कोविड -19 वैक्सीन कोवैक्सिन विकसित करने में उनकी शानदार भूमिका के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है. महिमा दतला, एमडी, बायोलॉजिकल ई, ने 12-18 वर्ष की आयु के लोगों को दी जाने वाली कोविड-19 वैक्सीन विकसित करने के लिए अपनी टीम का नेतृत्व किया. निस्संदेह, महिलाएं और लड़कियां समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की अग्रदूत हैं.

सुरक्षा और रक्षा- नारी, राष्ट्र की सुरक्षा में भी अपना योगदान दे रही है. महिला सैनिक, पुलिस अधिकारी, और अन्य सुरक्षा कर्मियों ने देश की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. आपदा प्रबंधन में भी महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. वे शांति और सुरक्षा के लिए काम करती हैं.

पर्यावरण संरक्षण- नारी, पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. वह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए जागरूकता लाती है और सतत जीवन शैली को बढ़ावा देती है. वे जल संरक्षण, वृक्षारोपण, और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं.

चुनौतियाँ और समाधान

उपयुक्त सभी बिन्दुओं से स्पष्ट है कि नारी के सहयोग के बिना एक विकसित समाज एवं सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण संभव ही नहीं है किन्तु नारी शक्ति के पूर्ण विकास में आज भी कई चुनौतियाँ विद्यमान हैं.

जैसे महिलाओं को आज भी शिक्षा, रोजगार, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व में असमानता का सामना करना पड़ता है. महिलाओं के प्रति सामाजिक पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता उनके विकास में बाधा बनती है. उन्हें सार्वजनिक और निजी स्थानों पर सुरक्षा का अभाव महसूस होता है और वे हिंसा का शिकार होती हैं. लाखों महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक नहीं मिल पाती है. भारत की पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना के कारण महिलाओं को आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर होना पड़ता है जिस कारण वह स्वतंत्र निर्णय लेने में भी असमर्थ होती हैं. वैश्वीकरण के इस अर्थप्रधान युग में एक ओर जहाँ स्त्रियाँ वर्जनाओं को तोड़ते हुए नित सफलता के नए सोपान पर चढ़ती जा रही हैं, वहीं दूसरी ओर उन्हें भोग की वस्तु के रूप में प्रचारित और प्रसारित भी किया जा रहा है. बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों के विज्ञापनों में इसकी झलक बड़ी आसानी से देखी जा सकती है.

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सर्वप्रथम लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उन्हें उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है. महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करना, उद्यमिता को बढ़ावा देना, और वित्तीय सहायता प्रदान करना इत्यादि भी प्रभावी उपाय साबित होंगे. इसके अतिरिक्त महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए सख्त कानून बनाना और उनका प्रभावी क्रियान्वयन करना भी वर्तमान समय की बड़ी आवश्यकता है. कुछ अन्य प्रभावी उपाय इस प्रकार हैं -

* लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता फैलाना और महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना को बढ़ावा देना.
* महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रियाओं में अधिक भागीदारी सुनिश्चित करना और उनकी नेतृत्व क्षमता का विकास करना.
* महिलाओं के लिए सुरक्षित सार्वजनिक और निजी स्थानों का निर्माण करना.
* महिलाओं को डिजिटल साक्षरता और अन्य तकनीकी कौशल में प्रशिक्षित करना.
* महिलाओं के लिए मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित करना.

नारी शक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है. महिलाओं को सशक्त बनाकर हम एक न्यायपूर्ण, समावेशी और समृद्ध भविष्य का निर्माण कर सकते हैं. यह आवश्यक है कि हम महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करें, उन्हें समान अवसर प्रदान करें, और उनके योगदान को मान्यता दें. नारी शक्ति को सशक्त बनाकर ही हम एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं. महिलाओं को समाज में उचित स्थान देकर हम एक बेहतर कल बना सकते हैं. नारी शक्ति को पहचानना और उसे बढ़ावा देना, एक प्रगतिशील समाज की पहचान है. महिलाओं की असीमित क्षमता और योग्यता को ध्यान में रखते हुए ज़रूरी है कि इन्हें आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र के केंद्र में रखा जाए ताकि देश विकास के नए आयाम स्थापित कर सके.

श्वेता चतुर्वेदी
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी): एक स्थायी भविष्य की दिशा में बैंकिंग का नया रास्ता

आज के समय में जब पर्यावरणीय संकट, सामाजिक असमानता और नैतिक शासन की आवश्यकता पर वैश्विक ध्यान केंद्रित है, ऐसे में पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) मानकों का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है. बैंकिंग और वित्तीय संस्थान अब केवल मुनाफे की बात नहीं करते, बल्कि वे इस बात पर भी विचार कर रहे हैं कि उनका निवेश, ऋण और संचालन समाज और पर्यावरण पर क्या प्रभाव डालता है.

ईएसजी बैंकिंग एक जिम्मेदार, पारदर्शी और दीर्घकालिक सोच पर आधारित प्रणाली है जो लाभ के साथ-साथ समाज और पर्यावरण की भलाई को भी महत्व देती है. यह बैंकिंग का भविष्य है - ऐसा भविष्य जो केवल आर्थिक मजबूती नहीं, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन भी सुनिश्चित करता है. अत: हमें इसे अपनाना चाहिए और प्रोत्साहित करना चाहिए.

ईएसजी का अर्थ और उद्देश्य:

ईएसजी का पूर्ण रूप है:

(पर्यावरण) Environment

(सामाजिक) Social

(शासन प्रणाली) Governance

ईएसजी बैंकिंग वह प्रक्रिया है जिसमें बैंक और वित्तीय संस्थाएं अपने निवेश और ऋण देने के फैसलों में इन तीनों मानकों को शामिल करती हैं. इसका उद्देश्य केवल आर्थिक लाभ नहीं, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी सकारात्मक योगदान देना होता है.

ईएसजी के मुख्य स्तंभ:

1. **पर्यावरणीय जिम्मेदारी (Environment):**

   बैंक उन परियोजनाओं को प्राथमिकता देते हैं जो कार्बन उत्सर्जन कम करें, स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा दें और पर्यावरण की रक्षा करें.

2. **सामाजिक उत्तरदायित्व (Social):**

   इसमें लैंगिक समानता, कार्यस्थल पर समावेशिता, शिक्षा, स्वास्थ्य और मानवाधिकार जैसे मुद्दों को महत्व दिया जाता है.

3. **सशक्त शासन प्रणाली (Governance):**

   इसमें पारदर्शिता, भ्रष्टाचार-निरोधक नीतियाँ और नैतिक व्यावसायिक आचरण शामिल होता है.

ईएसजी बैंकिंग का महत्व:

यह निवेशकों, ग्राहकों और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को दर्शाता है. लंबे समय में यह बैंक को स्थायित्व और विश्वास दिलाता है. यह पर्यावरण और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालता है, जिससे सतत विकास को बढ़ावा मिलता है.

ई (पर्यावरण)

बैंक अब पर्यावरणीय परियोजनाओं में निवेश को प्राथमिकता दे रहे हैं, जैसे:हरित ऊर्जा (सौर, पवन)जलवायु परिवर्तन से लड़ने वाली परियोजनाएं पर्यावरण संरक्षण संबंधी ऋण और अनुदान इसके अलावा, बैंक अपने स्वयं के कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं, जैसे डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देना, कागज रहित लेन-देन आदि.

2. **एस (सामाजिक)**

   सामाजिक जिम्मेदारियों के अंतर्गत बैंक निम्न पहल कर रहे हैं:वित्तीय समावेशन: ग्रामीण और गरीब वर्ग को बैंकिंग सेवाओं

से जोड़ना कर्मचारियों के लिए सुरक्षित और समावेशी कार्यस्थल बनाना. महिला सशक्तिकरण और लघु उद्योगों को बढ़ावा देना

3. **जी (गवर्नेंस या शासन)**

अच्छा शासन केवल नियमों का पालन करना नहीं है, बल्कि पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करना भी है. इसमें शामिल हैं: भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी से निपटना निवेशकों और ग्राहकों को स्पष्ट जानकारी देना नैतिक निर्णय प्रक्रिया अपनाना

बैंकिंग और ईएसजी का संबंध

बैंक न केवल खुद इन मूल्यों को अपनाते हैं, बल्कि वे जिन कंपनियों को ऋण देते हैं या जिनमें निवेश करते हैं, उनके ईएसजी प्रदर्शन का मूल्यांकन भी करते हैं. इससे यह सुनिश्चित होता है कि पूंजी उन्हीं परियोजनाओं में लगे जो सतत विकास में सहायक हों.

भारत में ईएसजी बैंकिंग की स्थिति:

भारत में रिज़र्व बैंक (RBI) ने ईएसजी से जुड़े जोखिमों को पहचानने और उन्हें नीतियों में शामिल करने पर बल दिया है. भारतीय स्टेट बैंक (SBI), एचडीएफसी (HDFC), और आईसीआईसीआई (ICICI) जैसे बैंक अब ग्रीन बॉन्ड, सस्टेनेबल फाइनेंस और ईएसजी रिपोर्टिंग पर ध्यान दे रहे हैं.

निष्कर्ष

ईएसजी केवल एक ट्रेंड नहीं है, बल्कि यह एक ज़रूरत है. बैंकिंग क्षेत्र में ईएसजी को अपनाने से न केवल पर्यावरण और समाज को लाभ होता है, बल्कि इससे बैंकों की दीर्घकालिक स्थिरता और ग्राहकों में विश्वास भी बढ़ता है. आने वाले समय में, ईएसजी आधारित बैंकिंग नीतियाँ किसी भी वित्तीय संस्था की पहचान और सफलता का आधार बनेंगी वहीं हरित और नैतिक बैंकिंग, आधुनिक बैंकिंग की नई दिशा हैं जो पारंपरिक मुनाफे की सोच से आगे बढ़कर समाज और पर्यावरण की भलाई को केंद्र में लाती हैं. यदि सभी बैंक इन पहलों को अपनाएं, तो न केवल आर्थिक विकास होगा बल्कि यह एक न्यायसंगत और सतत भविष्य की ओर भी मजबूत कदम होगा.

सोमिल सेतु
सहायक प्रबंधक
विपणन विभाग, क्षे.का.कोलकता(द)

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे जी ने दिनांक 23 जनवरी,2025 को उपभोक्ता मामले,खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण संबंधी संसदीय स्थायी समिति के अध्ययन दौरे में बैंक का प्रतिनिधित्व किया साथ ही उनकी अध्यक्षता में ऋण शिविर (Credit Camp) का भी आयोजन किया गया

टाटा मेमोरियल द्वारा आयोजित National Conference on “Re-Imaging Libraries: Balancing Tradition and Innovation in the Digital Era” में एसपीबीटी महाविद्यालय की लाइब्रेरी को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है. पुरस्कार प्राप्त करती हुई पुस्तकालय प्रबंधक सुश्री मनीषा टिके एवं सुश्री अनुजा सुर्यवंशी.

अपनी प्रशंसा स्वयं करने से बेहतर है यह कार्य दूसरे करें.

Banking Beyond Border

(by Mohan Vasant Tanksale)

Poppy Sharma
CHRO, Central Bank of India

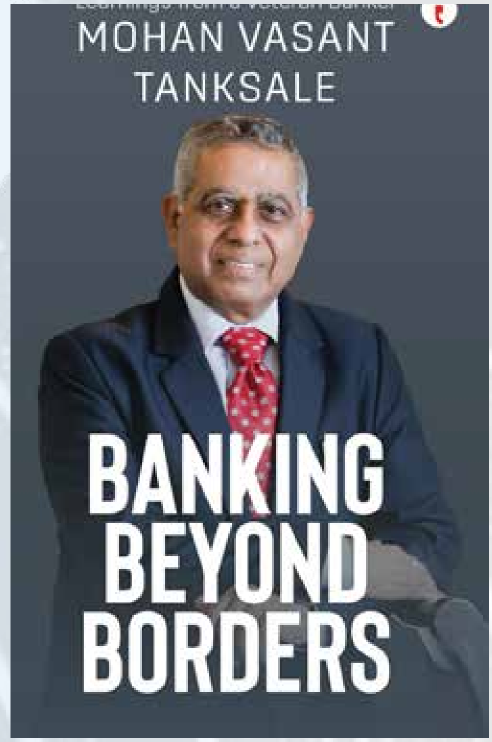

Banking is more than just transactions, policies, and numbers—it is a dynamic field that requires dedication, adaptability, and a deep understanding of customer needs. Banking Beyond Border by Mohan Vasant Tanksale is a testament to this very essence, offering an insightful journey into the world of banking through the eyes of a seasoned professional.

As I sifted through the pages of this book, I felt as though I was reading my own life story from the early days of my career. The experiences, challenges, and triumphs shared by the author will resonate deeply with many successful bankers of that era, evoking memories of their own journeys through the banking industry.

Mohan Vasant Tanksale's remarkable career is an inspiring story in itself. From humble beginnings as a clerk in the Central Bank of India to ascending to the esteemed position of Chairman & Managing Director of the same institution, his journey exemplifies perseverance and excellence. His experience spans across some of India's most prominent banks, including the State Bank of India, Union Bank of India, and Punjab National Bank, culminating in his role as CEO of the Indian Banks' Association (IBA). Having worked in diverse departments, handled complex challenges, and led at the highest levels, he brings a wealth of practical wisdom to this book.

Banking Beyond Border serves as an invaluable guide for bankers at all stages of their careers. It provides insights into the workings of the banking industry, practical strategies for customer engagement, and essential leadership lessons for those aspiring to reach the top. The book also offers a structured approach for branch managers and banking professionals, guiding them on how to analyze their market, serve their clientele effectively, and drive business growth.

What makes this book truly compelling is the clarity and accessibility of its language. Written in an engaging manner, it holds the reader's attention from the first page to the last. The combination of personal experiences, industry expertise, and practical advice makes it a must-read for every banking professional.

It is my belief that Banking Beyond Border will serve as a guiding light for those looking to navigate the ever-evolving landscape of the banking industry. Whether you are starting your career, aiming for leadership, or simply interested in understanding the intricacies of banking, this book will offer valuable lessons that stand the test of time.

अन्तर्राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन: दिनांक १२.०२.२०२५ को क्षेत्रीय कार्यालय, मुजफ्फरपुर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, डॉ. विचित्र सेन गुप्त, उप निदेशक, गृह मंत्रालय; विशिष्ट अतिथि एवं वक्ता, प्रो. प्रसून दत्त सिंह, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी; श्री शैलेन्द्र प्रसाद, उप महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ इंडिया; श्री राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, श्री कुमार विवेक, क्षेत्रीय प्रमुख, सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, डॉ. ज्ञान प्रकाश, अतिथि प्रोफ़ेसर, हंकुक विश्विद्यालय, दक्षिण कोरिया; डॉ. श्वेता सहायक आचार्य, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी उपस्थित थे. साथ ही, मुजफ्फरपुर के सभी कार्यालयों के स्टाफ सदस्य एवं ऑनलाइन माध्यम से देश के सभी भागों से राजभाषा अधिकारी एवं स्टाफ सदस्य जुड़े थे तथा विदेशों से, कनाडा, यूएई, नेपाल, दक्षिण कोरिया, जापान इत्यादि देशों से भी लोग जुड़े थे.

भीतर और बाहर दोनों ही स्तरों पर शांत रहनेवाला ही प्रसन्न रहता है - विश्वबंधु शास्त्री

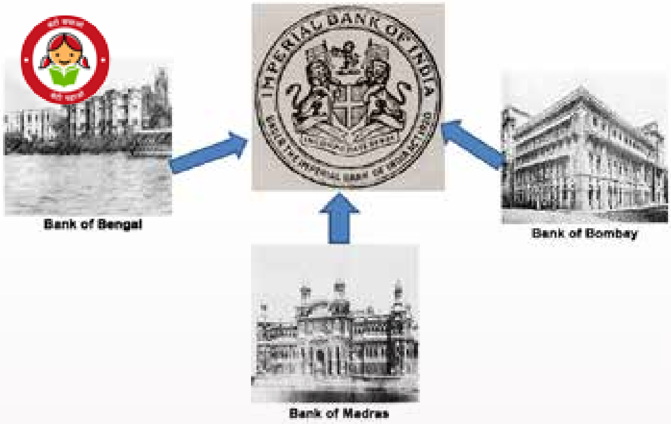

प्राचीन से नवीन बैंकिंग: एक परिवर्तनशील यात्रा

बैंकिंग का इतिहास मानव सभ्यता के विकास से गहराई से जुड़ा हुआ है. जब समाज ने वस्तु विनिमय से आगे बढ़कर मुद्रा का उपयोग शुरू किया, तब आर्थिक लेन-देन को सरल और सुरक्षित बनाने के लिए बैंकिंग व्यवस्था की आवश्यकता महसूस की गई. प्राचीन काल में बैंकिंग प्रणाली अत्यधिक सरल थी, लेकिन समय के साथ यह अधिक संगठित और व्यापक बन गई.

प्राचीन भारत में बैंकिंग

भारत में प्राचीन बैंकिंग की जड़ें वेदों और स्मृतियों में देखी जा सकती हैं.

ऋग्वेद और अर्थशास्त्र में उल्लेख: ऋग्वेद में व्यापार और ऋण की परंपरा का वर्णन मिलता है. चाणक्य के अर्थशास्त्र में भी बैंकिंग जैसी व्यवस्थाओं का उल्लेख है.

साहूकार और महाजन: प्राचीन भारत में साहूकार और महाजन बैंकिंग सेवाएं प्रदान करते थे. वे ऋण देने, धन जमा करने और व्यापारिक लेन-देन में सहायता करते थे.

हुंडी और धनादेश: व्यापारिक मार्गों पर व्यापारियों की सुरक्षा के लिए हुंडी प्रणाली प्रचलित थी. यह आज के बैंक ड्राफ्ट के समान थी, जिससे व्यापारी बिना नकद ले जाए व्यापार कर सकते थे.

अन्य सभ्यताओं में बैंकिंग

मेसोपोटामिया: लगभग 2000 ईसा पूर्व, मेसोपोटामिया की सभ्यता में मंदिर और महल बैंकिंग केंद्रों के रूप में कार्य करते थे. लोग अनाज, सोना और चांदी को जमा करते थे और बदले में ऋण प्राप्त करते थे.

मिस्र और ग्रीस: मिस्र में ग्रेनरी बैंकिंग होती थी, जहां किसान अनाज जमा कर सकते थे. ग्रीस में टेम्पल बैंकिंग की प्रथा थी, जिसमें मंदिरों को सुरक्षित स्थान माना जाता था और लोग वहां धनराशि जमा करते थे.

रोम साम्राज्य: रोम में ट्रैपेजाइट्स नामक बैंकर्स कार्यरत थे, जो ऋण देते थे और मुद्रा विनिमय का कार्य करते थे.

प्राचीन बैंकिंग की विशेषताएं

ऋण और जमा सेवाएं: लोग अपने धन को सुरक्षित रखने के लिए बैंकिंग संस्थाओं का उपयोग करते थे और समय-समय पर ऋण लेते थे.

व्यापारिक लेन-देन: व्यापारियों के लिए बैंकिंग प्रणाली ने लेन-देन को सरल बनाया.

सुरक्षा और विश्वास: मंदिर और महल जैसे प्रतिष्ठित स्थानों पर धनराशि जमा करना सुरक्षित माना जाता था.

हुंडी और साख पत्र: व्यापारिक मार्गों पर नकद ले जाने की असुरक्षा को कम करने के लिए हुंडी का उपयोग किया जाता था.

नवीन बैंकिंग की शुरुआत

नवीन बैंकिंग, जिसे हम आधुनिक बैंकिंग भी कह सकते हैं, ने वित्तीय सेवाओं की दुनिया में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं. तकनीकी प्रगति, डिजिटल अवसंरचना और उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों ने बैंकिंग को पहले से कहीं अधिक सरल, तेज और सुरक्षित बना दिया है. आज की डिजिटल बैंकिंग प्रणाली ने पारंपरिक बैंकिंग प्रक्रियाओं को पुनर्परिभाषित किया है, जिससे ग्राहकों को अधिक सुविधाजनक और त्वरित सेवाएं मिल रही हैं.

18वीं और 19वीं सदी में औद्योगिक क्रांति के साथ आधुनिक बैंकिंग की नींव पड़ी.

1770 में बैंक ऑफ हिंदुस्तान: भारत में पहला बैंक स्थापित हुआ.

1806 में बैंक ऑफ कलकत्ता: इसे बाद में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के रूप में जाना गया.

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI): 1935 में भारत का केंद्रीय बैंक स्थापित हुआ, जिसने बैंकिंग प्रणाली को नियंत्रित और व्यवस्थित किया.

नवीन बैंकिंग की विशेषताएं

1. **डिजिटल बैंकिंग**

   मोबाइल बैंकिंग और इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से ग्राहक घर बैठे बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं.

   UPI (Unified Payment Interface) और डिजिटल वॉलेट ने भुगतान को त्वरित और सरल बना दिया है.

   पेपरलेस बैंकिंग को बढ़ावा देकर पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान

दिया जा रहा है.

2. **ऑनलाइन भुगतान और फिनटेक सेवाएं**

क्यूआर कोड स्कैनिंग और डिजिटल पेमेंट गेटवे के माध्यम से व्यापारियों और ग्राहकों के लिए लेन-देन सहज हो गया है.

Buy Now, Pay Later (BNPL) जैसी सेवाएं उपभोक्ताओं को क्रेडिट सुविधा प्रदान कर रही हैं.

3. **एआई और मशीन लर्निंग का उपयोग**

बैंक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग की सहायता से ग्राहकों की व्यवहारिक प्रवृत्तियों का अध्ययन कर बेहतर सेवाएं प्रदान कर रहे हैं.

चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट ग्राहकों की समस्याओं का त्वरित समाधान प्रदान करते हैं.

4. **ब्लॉकचेन और साइबर सुरक्षा**

ब्लॉकचेन तकनीक के माध्यम से लेन-देन अधिक सुरक्षित और पारदर्शी बनाए जा रहे हैं.

साइबर सिक्योरिटी में निवेश कर बैंकों ने ग्राहकों के डेटा को सुरक्षित रखने के उपाय किए हैं.

5. **नियो बैंकिंग और ओपन बैंकिंग**

नियो बैंक पूरी तरह डिजिटल बैंक हैं, जिनकी कोई भौतिक शाखा नहीं होती.

ओपन बैंकिंग की मदद से ग्राहक अपनी वित्तीय जानकारी को सुरक्षित रूप से थर्ड-पार्टी एप्लिकेशन के साथ साझा कर सकते हैं, जिससे बेहतर वित्तीय सेवाएं मिलती हैं.

नवीन बैंकिंग के लाभ

सुविधा और पहुंच: ग्राहकों को बैंक की शाखा में जाने की आवश्यकता नहीं होती, वे अपने मोबाइल या लैपटॉप के माध्यम से बैंकिंग कर सकते हैं.

समय और लागत की बचत: डिजिटल बैंकिंग से लेन-देन तुरंत और बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के किए जा सकते हैं.

वित्तीय समावेशन: ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में भी बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं.

पारदर्शिता और सुरक्षा: लेन-देन की पूरी जानकारी डिजिटल माध्यम से रिकॉर्ड होती है, जिससे धोखाधड़ी की संभावना कम होती है.

प्राचीन बैंकिंग प्रणाली ने मानव सभ्यता को आर्थिक स्थिरता और व्यापारिक समृद्धि की ओर अग्रसर किया. यह व्यवस्था विश्वास, सुरक्षा और सुविधा के सिद्धांतों पर आधारित थी. समय के साथ, इन बुनियादी संरचनाओं ने आधुनिक बैंकिंग प्रणाली की नींव रखी, जिसने आज के वैश्विक आर्थिक तंत्र को आकार दिया है

प्राचीन बैंकिंग की यह यात्रा हमें यह सिखाती है कि आर्थिक विकास में विश्वास और पारदर्शिता का महत्वपूर्ण स्थान है, और यही सिद्धांत आज भी बैंकिंग व्यवस्था की रीढ़ बने हुए हैं.

अच्छे बैंक से महान बैंक की ओर: सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की यात्रा

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, जिसकी स्थापना वर्ष 1911 में हुई थी, भारतीय बैंकिंग प्रणाली में एक प्रमुख स्थान रखता है. यह बैंक **''भारत के लिए भारतीयों द्वारा''** स्थापित पहला वाणिज्यिक बैंक था, जिसका उद्देश्य देश की आर्थिक प्रगति को सशक्त बनाना था. पिछले एक सदी से भी अधिक समय में, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने एक अच्छे बैंक से महान बैंक बनने की दिशा में निरंतर कदम बढ़ाए हैं.

एक अच्छे बैंक की पहचान

एक अच्छा बैंक अपनी ग्राहक सेवा, वित्तीय स्थिरता और सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए जाना जाता है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने अपने संचालन के प्रारंभिक वर्षों में ही इन मूल्यों को अपनाया. बैंक ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और सभी वर्गों तक बैंकिंग सेवाएं पहुंचाने का प्रयास किया.

ग्रामीण विकास: किसानों और लघु उद्यमियों को ऋण प्रदान कर आर्थिक सशक्तिकरण में भूमिका निभाई.

सामाजिक बैंकिंग: जन धन योजना, मुद्रा लोन, स्टैंड-अप इंडिया जैसी योजनाओं में सक्रिय भागीदारी.

ग्राहक सेवा: शाखाओं और एटीएम नेटवर्क का विस्तार कर ग्राहकों को सुलभ सेवाएं प्रदान की.

महान बैंक की ओर यात्रा

एक महान बैंक बनने के लिए केवल वित्तीय सेवाएं प्रदान करना पर्याप्त नहीं होता. नवाचार, तकनीकी उन्नति, सतत विकास और ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण इस दिशा में प्रमुख भूमिका निभाते हैं. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने निम्नलिखित उपायों के माध्यम से अपनी यात्रा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है:

1. **डिजिटल परिवर्तन**

मोबाइल और इंटरनेट बैंकिंग के माध्यम से ग्राहकों को 24x7

सेवाएं प्रदान की जा रही हैं.

UPI, IMPS और NEFT जैसी त्वरित भुगतान सेवाएं ग्राहकों को सरलता से उपलब्ध हैं.

AI और डेटा एनालिटिक्स के उपयोग से व्यक्तिगत बैंकिंग अनुभव प्रदान किया जा रहा है.

2. ग्राहक केंद्रितता

संबंध प्रबंधक मॉडल के तहत ग्राहकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सेवाएं प्रदान की जा रही हैं.

नवाचार हब के माध्यम से नए उत्पाद और सेवाएं विकसित की जा रही हैं.

फीडबैक सिस्टम को सशक्त बनाकर ग्राहक संतुष्टि को प्राथमिकता दी जा रही है.

3. सतत विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व

हरित बैंकिंग को बढ़ावा देने के लिए पेपरलेस बैंकिंग और डिजिटल सेवाओं को प्राथमिकता दी जा रही है

कृषि और MSME क्षेत्र के वित्तपोषण में सहयोग कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त किया जा रहा है.

CSR पहल के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में योगदान दिया जा रहा है.

4. मानव संसाधन विकास

कर्मचारियों का सतत प्रशिक्षण और कौशल विकास के लिए अत्याधुनिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं.

लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम के माध्यम से भावी नेतृत्व को सशक्त किया जा रहा है.

निष्कर्ष

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की यात्रा अच्छे बैंक से महान बैंक की ओर, उसके ग्राहकों की संतुष्टि, नवाचार के प्रति प्रतिबद्धता और सतत विकास के लक्ष्यों को दर्शाती है. बैंक की दूरदृष्टि, नेतृत्व और ग्राहकों के साथ विश्वासपूर्ण संबंधों ने इसे भारतीय बैंकिंग प्रणाली का एक मजबूत स्तंभ बना दिया है.

आने वाले समय में, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया डिजिटल क्रांति, वित्तीय समावेशन और हरित बैंकिंग के साथ नए आयाम स्थापित करेगा और अपनी महानता की यात्रा को निरंतर जारी रखेगा.

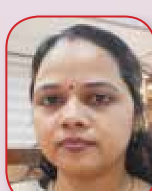

प्रियंका प्रियदर्शिनी (स.प्र.)
मांसप्र क्षे.का.(कोलकाता दक्षिण)

बेटियाँ

बेटियाँ चावल उछाल, बिना पलटे विदा हो जाती हैं
छोड़ जाती हैं बुक शेल्फ में अपनी यादों को,
दीवार पर टंगी खबसूरत पेंटिंग के कोने में,
दर्ज कर जाती है अपना नाम,
नर्म एहसासों की निशानियाँ छोड़ जाती हैं,
हाँ बेटियाँ विदा हो जाती हैं.

रसोई में अपनी पसंद की सलीकेदार सजावट,
बैठक में नया फैशन,
और अलमारियों में पुरानी ड्रेस छोड़,
तमाम नई खरीदारी को सूटकेस में समेट,
मन के आँगन की तुलसी में अपने सपने दबाकर,
बेटियाँ विदा हो जाती हैं.

सुने कमरे में उनका स्पर्श
पूजाघर की रंगोली में उंगलियों की महक,
पनीली आँखों में घर का हर कोना भरकर
महावर लगे पैरों से दहलीज पार कर जाती हैं
बेटियाँ चावल उछाल विदा हो जाती हैं.

एल्बम में मुस्कुराती तस्वीरें,
धूल भरे मेडल और कप
आँगन में गेंदे की क्यारियाँ
गुड़िया को पहनाई पुरानी साड़ी और
उदास खिलौने छोड़ जाती है
बेटियाँ चावल उछाल विदा हो जाती हैं.

शादी की सीडी देखते पापा हर बार विदाई पर हट जाते हैं
सारा बचपन तकिए के नीचे दबाकर,
जिम्मेदारी की चुनर ओढ़, चली जाती हैं
बेटियाँ चावल उछाल बिना पलटे विदा हो जाती हैं.

सुश्री नीता कुमारी
प्रबंधक, उत्तर मुंबई, क्षेत्रीय कार्यालय

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!

श्री जे एस साहनी,
महाप्रबंधक

श्री टी. बालाचंद्रन,
महाप्रबंधक

श्री एस के गुप्ता,
महाप्रबंधक

श्री सूर्यनारायण,
उप-महाप्रबंधक

श्री एस.के.सिंह,
उप-महाप्रबंधक

श्री सतीश तलरेजा,
उप-महाप्रबंधक

श्री संतोष श्रीवास्तव,
उप-महाप्रबंधक

पी वी उन्नीकृष्णन,
उप-महाप्रबंधक

सेन्ट्रलाइट पढ़िए और आकर्षक इनाम जीतिए

कृपया QR कोड स्कॅन करें

दिनांक 30.05.2025 तक प्राप्त सर्वश्रेष्ठ 20 विजेताओं को राशि रु.500/- प्रदान कर पुरस्कृत किया जाएगा.

खेल दिवस, केन्द्रीय कार्यालय

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के विभिन्न अंचलों द्वारा महिला दिवस का आयोजन

केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित महिला दिवस की झलकियां

गणतंत्र दिवस, केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

जो व्यक्ति अपने मार्ग से भटक जाता है, वह विनाश के रास्ते पर निकल जाता है.

दिनांक 17 जनवरी 2025 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के राँची क्षेत्रीय कार्यालय का अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कल्याण संबंधी संसदीय समिति का अध्ययन दौरे में बैंक का प्रतिनिधित्व करते माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम. वी. राव.

दिनांक 09 जनवरी 2025 को जबलपुर में टाउन हॉल मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव.

आईपीएल में विजेता टीम के खिलाड़ी को पुरस्कृत करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही.

क्षेत्रीय कार्यालय कोचिन में आयोजित टाउन हॉल मीटिंग में क्षेत्रीय कार्यालय कोचिन की ई-पत्रिका गोश्री वाणी का विमोचन करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही, अंचल प्रमुख चेन्नै श्री के. शशिधर एवं क्षेत्रीय प्रमुख कोचिन श्री राहुल सिंहल.

दिनांक 18.01.2025, संसदीय स्थायी समिति की बैठक के दौरान तिरुवनन्तपुरम क्षेत्र की ई-पत्रिका अनन्तपुरी वाणी का विमोचन करते हुए सामाजिक न्याय और अधिकारिता संबंधी स्थायी संसदीय समिति के अध्यक्ष माननीय श्री पी.सी.मोहन, संसदीय स्थायी समिति के अन्य सदस्य, हमारे बैंक के कार्यपालक निदेशक माननीय श्री विवेक वाही, आदरणीय अंचल प्रमुख श्री के. शशिधर, उप अंचल प्रमुख श्री एन. बालचंद्रन, क्षेत्रीय प्रमुख श्री कफ़ील अहमद व अन्य उपस्थित गणमान्य अधिकारी.

आंचलिक कार्यालय हैदराबाद में आयोजित टाउन हॉल मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही महोदय.

पुणे अध्ययन दौरे में कार्पोरेट ग्राहक बैठक में सहभागिता करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा जी की अध्यक्षता में पुणे में, टाउन हॉल बैठक का आयोजन किया गया. मंच पर आसीन श्री एम वी मुरली कृष्णा, कार्यपालक निदेशक महोदय एवं अंचल प्रमुख श्री अजय कुमार सिंह एवं क्षेत्रीय प्रमुख पुणे सुश्री आशा कोटस्थाने,

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा द्वारा पुणे अंचल के सोलापुर क्षेत्रीय कार्यालय परिसर का वर्चुअल उदघाटन किया गया.

भोपाल में माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम वी मुरली कृष्णा जी की अध्यक्षता में टाउन हॉल बैठक का आयोजन किया गया.

हमारे 15वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सभी अंचलों द्वारा लगाई गई राजभाषा प्रदर्शनी